Postal Reg. No.GDP -45/2017-2019

अल्लाह तआला का आदेश

تُوْلِجُ الَّيْلَ فِي النَّهَارِ وَتُوْلِجُ النَّهَارَ فِي الَّيْلِ وَتُخْرِجُ الْحَيَّ مِنَ الْمَيِّتِ وَتُخْرِجُ الْمَيِّتَ مِنَ الْحَيِّ وَتَرْزُقُ مَنْ تَشَآءُ بِغَيْرِ حِسَابٍ ۝

(सूरत आले-इम्रान आयत :27)

अनुवाद: तू रात को दिन में जाख़िल करता है और दिन को रात में दाख़िल करता है और तू मुर्दा से ज़िन्दा को निकालता है और ज़िन्दा से मुर्दा निकालता है और तू जिसे चाहे बिना हिसाब के रिज़्क प्रदान करता है

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ نَحْمَدُهٗ وَنُصَلِّيْ عَلٰى رَسُوْلِهِ الْكَرِيْمِ وَعَلٰى عَبْدِهِ الْمَسِيْحِ الْمَوْعُوْدِ

وَلَقَدْ نَصَرَكُمُ اللّٰهُ بِبَدْرٍ وَّاَنْتُمْ اَذِلَّةٌ

वर्ष 4

साप्ताहिक क़ादियान

बदर

The Weekly BADAR Qadian HINDI

अंक 6

संपादक शेख़ मुजाहिद अहमद

मूल्य 500 रुपए वार्षिक

1 जमादी सानी 1440 हिजरी कमरी 7 तब्लीग़ 1397 हिजरी शमसी 7 फरवरी 2019 ई.

अख़बार-ए-अहमदिया

रूहानी ख़लीफ़ा इमाम जमाअत अहमदिया हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद साहिब ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल;ल अज़ीज सकुशल हैं। अलहम्दोलिल्लाह। अल्लाह तआला हुज़ूर को सेहत तथा सलामती से रखे तथा प्रत्येक क्षण अपना फ़जल नाज़िल करे। आमीन

नफ्स लंबी उम्र के वादे करता है। यह धोखा देता है। आयु का भरोसा नहीं है जल्दी सच्चाई और इबादत की तरह झुकना चाहिए और सुबह से लेकर शाम तक हिसाब करना चाहिए।

तहज्जुद के लिए उठो और ज़ौक तथा शौक़ से अदा करो। मध्य की नमाज़ों में काम के कारण परीक्षाएं आ जाती हैं

जो लोग सच्चाई के लिए कष्ट और नुकसान उठाते हैं और वे लोगों की नज़रों में पसंद किए जाते हैं यह काम नबियों और सिद्दीकों का है

उपदेश सय्यदना हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम

रस्मी बैअत लाभ नहीं देती।

बैअत रस्मी लाभ नहीं देती। उसी बैअत से हिस्सेदार होना कठिन होता है। उसी समय हिस्सेदार होगा जब अपनी हस्ती को तर्क कर के बिल्कुल मुहब्बत और श्रद्धा के साथ उस के साथ हो जाए। मुनाफिक आं हज़रत सल्लल्लाहो वसल्लम के साथ सच्चा संबंध ना होने की वजह से आख़िर बेईमान रहे। उनको सच्ची मुहब्बत और श्रद्धा पैदा ना हुई इसीलिए ज़ाहरी ला इलाहा इल्लल्लाह उनके काम ना आया। तो उन सम्बन्धों को बढ़ाना बहुत आवश्यक काम है अगर उन संबंधों को वह इच्छुक नहीं बढ़ाता और चेष्टा नहीं करता तो इसका शिक्वा और अफसोस व्यर्थ है। मुहब्बत तथा श्रद्धा का संबंध बनाना चाहिए। जहां तक संभव हो उस इंसान मुर्शिद के रंग में हो। तरीकों में तथा आस्था में। नफ्स लंबी उम्र के वादे करता है। यह धोखा देता है। आयु का भरोसा नहीं है जल्दी सच्चाई और इबादत की तरह झुकना चाहिए और सुबह से लेकर शाम तक हिसाब करना चाहिए।

तहज्जुद के लिए ताकीद

इस ज़िन्दगी के सारे मामले अगर सांसारिक कामों में व्यतीत हो गए तो आख़िरत के लिए क्या किया।?

तहज्जुद के लिए उठो और ज़ौक तथा शौक़ से अदा करो। मध्य की नमाज़ों में काम के कारण परीक्षाएं आ जाती हैं राज़िक अल्लाह तआला है। नमाज़ अपने समय पर अदा करनी चाहिए। ज़ुहर तथा असर कभी कभी जमा हो सकती है। अल्लाह तआला जानता था कि लोग कमज़ोर होंगे, इसलिए यह गुंजाइश रखी मगर यह गुंजाइश तीन के जमा करने में नहीं हो सकती।

अल्लाह तआला के लिए तकलीफ उठाना

जब नौकरी में और दूसरे कई मामलों में लोग सज़ा पाते हैं और काम के लिए अधिकारियों की सजा को पाते हैं तो अगर अल्लाह तआला के लिए तकलीफ उठाए तो क्या ख़ूब है। जो लोग सच्चाई के लिए कष्ट और नुकसान उठाते हैं और वे लोगों की नज़रों में पसंद किए जाते हैं यह काम नबियों और सिद्दीकों का है जो आदमी अल्लाह तआला के लिए सांसारिक हानि उठाता है अल्लाह तआला कभी अपने ज़िम्मे नहीं रखता पूरा बदला देता है ।

इंसान मुनाफिकों की आदत ना धारण करे

इंसान को अनिवार्य है कि मोमिनों की आदत ना रखे जैसे एक हिंदू चाहे अधिकारी हो या हकीम कहे के राम और रहीम एक है, तो ऐसे अवसर पर हां में हां ना मिलाए। अल्लाह तआला शिष्टाचार से मना नहीं करता। शिष्टाचार से उत्तर दे। हिक्मत के यह अर्थ नहीं हैं कि इस तरह की बात की जाए जिस से अपने आप जोश पैदा हो और व्यर्थ जंग हो। कभी सच्चाई को न छुपाए। हां में हां मिलाने से इंसान काफिर हो जाता है

यार ग़लिब शू कि ता ग़ालिब शवी

अल्लाह तआला का सम्मान और लज्जा रखनी चाहिए। हमारे धर्म में कोई बात शिष्टाचार के विरोध नहीं।

इस्लाम पीड़ित है।

इस्लाम हमेशा पीड़ित चला आया है जैसे कभी दो भाइयों में झगड़ा हो तो बड़ा भाई अपने सम्मान और पहले पैदा होने के अपने छोटे भाई पर जान बूझकर अत्याचार करता है इसलिए के वह जन्म में प्रथम होने से अपना हक अधिक विचार करता है हालांकि हक दोनों का बराबर है इसी तरह का जुल्म इस्लाम पर हो रहा है। इस्लाम सब धर्मों के बाद आया। इस्लाम ने सब धर्मों की ग़लतियां उनको बतलाई जैसे नियम है कि अज्ञानी भलाई चाहने वाले का दुश्मन हो जाता है इसी तरह सब धर्म उससे नाराज़ हुए। क्योंकि उनके दिलों में अपना अपना सम्मान बैठा हुआ था। इंसान क़ौम की अधिकता, प्राचीनता और माल की अधिकता के कारण अंहकारी हो जाता है। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो वसल्लम एक गरीब थोड़ी सी और नई जमाअत वाले थे। इसलिए(आरम्भ में) मुखालिफों ने स्वीकार न किया। सच्चाई हमेशा पीड़ित होती है।

इस्लाम दूसरे धर्मों का उपकारक है

इस्लाम ऐसा पवित्र धर्म है कि किसी धर्म के संस्थापक को बुरा कहने नहीं देता। अन्य धर्म वाले झट गाली देने को तैयार हो जाते हैं। देखो यह ईसाई क़ौम आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को कितनी गालियां देती है। अगर आं हज़रत (सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम) इस समय जिंदा होते तो, आपके सांसारिक सम्मान के विचार से भी ये लोग कोई बुरी बात जुबान परन लाते सकते बल्कि हज़ारों दर्जा सम्मान से व्यवहार करते। काबुल के अमीर बोल और सुल्तान रूम एक उम्मती असलम के हैं उनको गाली नहीं दे सकते व्यवहार नहीं कर सकते मगर आपका नाम आ जाए तो हजारों गालियां देते हैं कारक है एक और किताब को बरी किया और खुद पीड़ित है इस्लाम का विषय ला इलाहा इल्लल्लाह दूसरे धर्म में नहीं है मल सुजात भाग 1 पृष्ठ 3 से 5

(मल्फूज़ात जिल्द 1 पृष्ठ 3 से 5)

☆ ☆ ☆

जमील अहमद नासिर प्रिंटर एवं पब्लिशर ने फ़ज़्ल-ए-उमर प्रिंटिंग प्रेस क़ादियान में छपवा कर दफ़्तर अख़बार बदर से प्रकाशित किया। प्रौपराइटर - निगरान बदर बोर्ड क़ादियान

सय्यदना हज़रत अमीरुल मोमिनीन ख़लीफतुल मसीह अल्ख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्ररेहिल अज़ीज़ की डेनमार्क और सवीडन का सफर, सितम्बर 2018 ई (भाग-6)

*** जलसा में आकर अब मुझे जीवन का उद्देश्य समझ आया है, मुझे हुज़ूर से मिलकर बहुत ख़ुशी हुई, हुज़ूर के व्यक्तित्व से बहुत प्रभावित हुआ हूँ, हुज़ूर निहायत ही शफीक़ और मुहब्बत करने वाले हैं, इस्लाम की सच्चाई को मैंने पा लिया है और आज बैअत कर के जमाअत अहमदिया में प्रवेश करता हूँ।**

*** यह जमाअत एक सच्ची जमाअत है और यह जलसा सच्चे लोगों का सम्मेलन है, जो एक दूसरे से प्रेम करने वाले हैं, एक आध्यात्मिकता से भरपूर इज्तिमा मैंने देखा है जब मैंने जमाअत अहमदिया के ख़लीफा को देखा तो मैंने अपने अन्दर एक अजीब परिवर्तन अनुभव किया जिस ने मेरे दिल को मुहब्बत से भर दिया मैंने ख़लीफा का नूर वाला चेहरा देखा। मैं हक की तलाश में था जो अल्हम्दो लिल्लाह मुझे मिल गया है। मैंने सच्चाई और नूर के रास्ते को पा लिया है और मैंने पूरे दिल की गहराई से बैअत करने का फैसला किया है।**

*** मुझे हुज़ूर का चेहरा दिखाई दिया तो सारी दुश्मनी, वैर, घृणा और सारे संदेह दिल से निकल गए, हुज़ूर का मुबारक चेहरा मेरे दिल में छप गया, अब मेरे पास इनकार की कोई गुंजाइश न थी और मैंने हुज़ूर के हाथ पर बैअत की, मुझे एक कठिनाई थी कि मेरी मंगेतर अहमदी नहीं होना चाहती थी लेकिन जब उसने हुज़ूर अनवर का लजना का संबोधित सुना तो तभी अहमदी होने का निर्णय लिया, मेरी मंगेतर ने कहा कि जिस जमाअत के पास इतनी दया करने वाला सहानुभूति करने लंबा और प्रेम करने वाला ख़लीफा हो उसे एक अस्तित्व से ही सारी बरकतें मिल गईं जो बाकी मुसलमानों के पास नहीं हैं।**

*** जलसा सालाना का माहौल पूरी तरह से अलग और बहुत आकर्षक पाया, जलसा सालाना इस्लाम की वास्तविक शिक्षा को प्रकट करने का व्यावहारिक नमूना है, ऐसे आचरण मैंने कभी भी किसी जलसा में नहीं देखे, मेरे दिल पर इसका बहुत गहरा असर हुआ, मुझे हुज़ूर का दीदार नसीब हुआ, हुज़ूर की कुव्वते कुदसिया के प्रभाव और चेहरे की नूरानियत प्रकट थी, मैं सारी रात दुआ करता रहा कि हे अल्लाह ! अगर यह जमाअत सत्य है तो मुझे बैअत की तौफीक़ प्रदान कर अल्लाह तआला ने मेरी दुआ स्वीकार की है और मुझे दिल का सन्तोष प्रदान किया और में बैअत करके इस जमाअत का हिस्सा बन गया हों जो कि वास्तव में सच्ची और इस्लाम की वास्तविक तस्वीर पेश करती है।**

*** जलसा सालाना जर्मनी 2018 में बैअत करने वाले नए अहमदियों के ईमान वर्धक घटनाएं।**

(रिपोर्टः अब्दुल माजिद ताहिर, एडिशनल वकीलुत्तबशीर लंदन)

(अनुवादकः शेख मुजाहिद अहमद शास्त्री)

जर्मन मेहमानों से हुज़ूर अनवर का ख़िताब(शेष.....)

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्ररेहिल अज़ीज़ ने फरमाया : एक अन्य आरोप जो इस्लाम पर लगाया जाता है वह महिलाओं से व्यवहार के बारे में है। कुछ ग़ैर-मुसलमानों यह डर रखते हैं कि अगर मुसलमान पश्चिम में प्रवास करते हैं, तो वे स्थानीय महिलाओं को पीड़ित बनाएंगे और उन से बुरा व्यवहार भी करेंगे। बेशक कुछ शरणार्थी इस प्रकार के अपराधों को करने वाले भी हैं, और यह भय तथा डर उन के इस प्रकार के मूर्ख व्यवहार के कारण पैदा हुए हैं। यहां मैं स्पष्ट रूप से वर्णन कर दूं कि यदि कोई महिला के सम्मान को नष्ट करता है या किसी भी रंग में उस से बुरा व्यवहार करता है तो वह इस्लाम की शिक्षाओं के ख़िलाफ पूरी तरह से कार्य करता है। इस्लाम इस तरह के व्यवहार को करार देता है। इस तरह कि घृणित और गंभीर सज़ा के लिए बहुत सख्त सज़ा देता है। उदाहरण के लिए इस्लाम कहता है कि यदि कोई ऐसे को करता है तो उसे सब के सामने कोड़े लगाए जाएं। इसलिए यदि आप वास्तव में इस तरह के व्यवहार को समाप्त करना चाहते हैं, तो ऐसे आपराधिक मुसलमान को इस्लामी कानून के अनुसार सज़ा दें। यद्यपि मेरा मानना है कि पश्चिमी सरकारें इस तरह के विचार से सहमत नहीं होंगी, और मानवाधिकार कार्यकर्ता निश्चित रूप से इसका विरोध करेंगे।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेहिल अज़ीज़ ने फरमाया : जैसा कि मैं पहले बयान कर चुका हूँ कि शरणार्थियों को स्वीकार करने में एक और बड़ा डर यह है कि इससे सरकार पर ज्यादा वित्तीय बोझ पड़ता है। इसलिए एक शरणार्थी को किसी देश में विशेषाधिकार के दाख़िल नहीं होना चाहिए, बल्कि उसे उस देश में इस सोच के साथ दाख़िल होना चाहिए कि वे उस देश के लिए क्या कर सकता है। मैंने पहले ही कई बार कहा है कि शरणार्थी उस देश पर निर्भर हैं जिस ने उन्हें पनाह दी है। उन्हें सरकार और जनता के लिए आभारी होना चाहिए। और इस की व्यावहारिक अभिव्यक्ति के रूप में, उन्हें अपना समय मेज़बान देश के लाभ और एलाउंसों का लाभ उठाकर अपना समय नहीं खोना चाहिए, बल्कि जितनी जल्दी हो सके उन्हें समाज का मुफीद बुजूद बनना चाहिए। उन्हें अपना रोज़गार प्राप्त करने के लिए कड़ी मेहनत करनी चाहिए और उन्हें काम करना चाहिए। चाहे सामान्य काम ही क्यों न मिलें? इस से न केवल उन का सम्मान तथा इज़्ज़त स्थापित होगी बल्कि इस से संबंधित सरकार पर बोझ कम हो जाएगा और स्थानीय लोगों की बैचेनी ख़त्म हो जाएगी। प्रत्येक मुस्लिम को याद रखना चाहिए कि आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया है कि देने वाला हाथ लेने वाले हाथ से बेहतर है। कई अवसरों पर सहाबा रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की लोगों ने मदद करने की कोशिश की, लेकिन उन्होंने इनकार कर दिया और अधिक पसन्द किया कि ख़ुद कमा कर खाएं। अगर शरणार्थियों को साधारण काम भी दिया जाए जो उन की योग्यता से कम हो तब भी उन्हें काम करना चाहिए। बजाए इस कि के सरकार ही उन की ज़रूरतों को पूरा करती रहे। अगर वे बोझ ही बने रहे तो समाज में सकारात्मक हिस्सा नहीं डाल सकते। इसके बजाए, बैचेनी बढ़ाने का कारण बनेंगे।

हुज़ूर अनवर ने फरमाया : इसके अलावा अगर सरकार शरणार्थियों को कुछ लाभ और वित्तीय सहायता प्रदान करती है तो उन्हें यह सुनिश्चित करना चाहिए कि इससे स्थानीय लोगों की आवश्यकताओं की अनदेखी न हों। कुछ देशों में शरणार्थियों को कर दाताओं में अधिक लाभ मिलता है। यह स्वाभाविक रूप से जनता में चिंता पैदा करता है, और फिर यह भी प्रतिक्रिया करती है। इसलिए, हर सरकार को बुद्धिमान पूर्ण और निष्पक्ष नीतियां बनाना चाहिए जिन्हें स्थानीय निवासियों और आश्रयों की आवश्यकताओं के बराबर माना जाना चाहिए, बल्कि स्थानीय लोगों से शरणार्थियों से बेहतर व्यवहार किया जाना चाहिए। कुछ दिन पहले पता चला है कि जर्मन सरकार एक नई नीति बना रही है जिस में शरणार्थियों के लिए आवश्यक बताया गया है कि वह जर्मनी में सेट होने से पहले एक साल तक सामुदायिक सेवा करेंगे। कुछ आलोचक अभी से यह दावा कर रहे हैं यह सिर्फ सस्ती मज़दूरी लेने का मामला है या यह एकीकरण प्रक्रिया में मदद नहीं करेगा। जबकि मुझे लगता है कि जो कोई भी अपने समाज की सेवा कर रहा है वह इस सेवा के माध्यम से इस समाज में जुड़ रहा है। बेशक सामुदायिक सेवा एक सकारात्मक काम है क्योंकि यह समाज के लिए हर व्यक्ति की सेवा की ज़िम्मेदारी पर केंद्रित है। इसलिए, जर्मन सरकार की इस नीति की आलोचना करने के बजाय प्रशंसा के योग्य है।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेहिल अज़ीज़ ने फरमाया : केवल मेज़बान सरकार की ही सारी जिम्मेदारी नहीं है कि वह सभी सामुदायिक सेवा प्रदान करेगी बल्कि इसे शरणार्थियों को ऐसे प्रशिक्षण करना चाहिए कि वे जितनी जिल्दी हो सके समाज के उपयोगी अस्तित्व बन सकें। यदि शरणार्थियों के पास दैनिक देखभाल

शेष पृष्ठ 8 पर

ख़ुत्बः जुमअः

"मसीह मौऊद को स्वीकार करने के बाद, पूर्ण इताअत ही सफलताओं और विजयों के लिए गारंटी है।"

साक्षात इताअत तथा वफा के नमूने बदरी सहाबी अब्दुल्लाह बिन रबी अन्सारी, हज़रत अतिया बिन नौयरह, हज़रत सहल बिन क़ैस, हज़रत अब्दुल्लाह बिन हमीर अल्अशजई, हज़रत उबैद बिन औस अन्सारी और हज़रत अब्दुल्लाह बिन जुबैर रज़ि अल्लाह तआला अन्हुम की सीरते मुबारका।

"अल्लाह तआला ने जिस तरह हज़रत अब्दुल्लाह बिन जुबैर और उसके साथियों को वफा के साथ और आदेश की रूह को समझने वाला बनाया था हमें भी तौफीक़ दे कि हम अल्लाह तआला से इसी प्रकार आदेश को समझने वाले हों और इस तरह हमेशा अल्लाह तआला के फज़्लों के वारिस बनते चले जाएं। "

सीरिया से सम्बन्ध रखने वाले सालेह, और शरीफ अहमदी आदरणीय नादिर अलहसनी साहिब की वफात और उन का ज़िक्रे ख़ैर और नमाज़ जनाज़ा ग़ायब

ख़ुत्बः जुमअः सय्यदना अमीरुल मो'मिनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह पंचम अय्यदहुल्लाहो तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़, दिनांक 28 दिसम्बर 2018 ई. स्थान - मस्जिद बैतुलफ़ुतूह, मोर्डन लंदन, यू.के.

أَشْهَدُ أَنْ لَّا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيكَ لَهُ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهُ وَرَسُولُهُ۔ أَمَّا بَعْدُ فَأَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ۔ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ۔ اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِيْنَ۔ اَلرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ۔ مٰلِكِ يَوْمِ الدِّيْنِ۔ اِيَّاكَ نَعْبُدُ وَ اِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ۔ اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ۔ صِرَاطَ الَّذِيْنَ اَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ ۔ غَيْرِ الْمَغْضُوْبِ عَلَيْهِمْ وَلَا الضَّآلِّيْنَ

आज जिन बदरी सहाबा का वर्णन करूंगा उन में से पहला नाम हज़रत अब्दुल्लाह बिन अर्राबेअ अन्सारी का है। हज़रत अब्दुल्लाह इब्न अर्राबेअ का सम्बन्ध ख़ज़रज कबीला की शाखा से बनू अबहर से था और आपकी माँ का नाम फातिमा बिन उमरो था। आप बैअत उक्बा सानिया में शामिल हुए थे और आप को जंग बदर तथा उहद तथा जंग मौता में शामिल होने की तौफीक़ मिली थी। जंग मौता में आप ने शहादत प्राप्त की।

(अत्तबकातुल कुब्रा जिल्द 3 पृष्ठ 407 अब्दुल्लाह बिन अर्राबेअ प्रकाशन दारुल कुतुब अल्इलमिया बैरूत 1990 ई)

(तारीख़ मदीना तथा दमिश्क भाग 2 बाब सिरया रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम इला शाम प्रकाशक दारुल फिक्र बैरूत 1995 ई)

दूसरे सहाबी हज़रत अतिया बिन नौयरह। यह जंग बद्र में शरीक हुए और इन के बारे में बस इतना ज्ञात है कि आप जंग बदर में शामिल हुए थे।

(असदुल ग़ाबाह 4 पृष्ठ 45, अतिया बिन नौयरह अल-नवीह, प्रकाशक दारुल कुतुब अल्इलमिया बैरूत 2003 ई)

फिर हज़रत सहल बिन क़ैस हैं। उनकी माँ का नाम नाइला बिन्त सलामह: था और आप प्रसिद्ध कवि हज़रत कअब बिन मलिक के चेचेरे भाई थे। सहल ने जंग बद्र और उहद में भाग लिया और जंग उहद में शहीद हुए।

(अत्तबकातुल कुब्रा भाग 3 पृष्ठ 436 सहल बिन क़ैस प्रकाशक दारुल कुतुब अल्इलमिया बैरूत 1990 ई)

आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम हर साल उहद के शहीदों की कब्रों के दर्शन करने के लिए जाते थे। जब आप इस घाटी में प्रवेश करते हैं, तो ज़ोर से फरमाते:

اَلسَّلَامُ عَلَيْكُمْ بِمَا صَبَرْتُمْ فَنِعْمَ عُقْبَى الدَّار सूरह रअद की आयत है वहां اَلسَّلَامُ عَلَيْكُمْ के स्थान पर سَلَامٌ عَلَيْكُمْ(अर्रअद 25) से शुरू होती है कि सलाम हो तुम पर इस कारण से जो तुम से सब्र किया اَلسَّلَامُ عَلَيْكُمْ بِمَا صَبَرْتُمْ فَنِعْمَ عُقْبَى الدَّار अत: क्या ही अच्छा है, इस घर का अन्जाम। आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के बाद हज़रत अबू बक्र, हज़रत उमर और हज़रत उसमान ने भी इस परंपरा को जारी रखा। फिर मुआविया भी जब हज या उमराह के लिए आते तो उहद के शुहदा की कब्रों के दर्शन के लिए आते। आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम फरमाया करते थे कि لَيْتَ أَنِّي غُوْدِرْتُ مَعَ أَصْحَابِ الْجَبَل हे काश मैं भी इन पहाड़ों वाले के साथ हो जाता अर्थात मुझे भी उस दिन शहादत मिल जाती। इसी तरह, जब ह ज़रत सअद बिन अबी वक़ास ग़ाब: जोकि मदीना के उत्तर पश्चिम में एक गाँव है, अपनी संपत्ति में जाते तो उहद के शुहदाए का दर्शन करते। तीन बार उन्हें सलाम कहते। फिर अपने साथियों की तरफ मुड़ते और उन्हें कहते कि क्या तुम लोग इन पर सलामती नहीं भेजोगे। जो तुम्हारे सलाम का जवाब देंगे। जो भी इन्हें सलाम कहेगा क़यामत के दिन उस के सलाम का जवाब देंगे।

एक बार आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम हज़रत मुसअब बिन उमैर की कब्र के पास से गुज़रे तो वहां रुक कर दुआ की और इस आयत की तिलावत फरमाई

مِنَ الْمُؤْمِنِيْنَ رِجَالٌ صَدَقُوْا مَا عَاهَدُوا اللّٰهَ عَلَيْهِ۔ فَمِنْهُمْ مَّنْ قَضٰى نَحْبَهٗ وَمِنْهُمْ مَّنْ يَّنْتَظِرُ۔ وَمَا بَدَّلُوْا تَبْدِيْلًا

(अल-अहज़ाब: 24) कि मोमिनों में इस प्रकार के मर्द हैं जिन्होंने जिस बात पर अल्लाह तआला से वादा किया उसे सच्चा कर दिखाया। مِنَ الْمُؤْمِنِيْنَ رِجَالٌ صَدَقُوْا مَا عَاهَدُوا اللّٰهَ عَلَيْهِ अत: उन में से वे भी हैं जिस ने अपनी मन्नत को पूरा कर दिया और वे भी हैं जो अभी इंतज़ार कर रहे हैं और उन्होंने अपने व्यवहार में कोई तब्दीली नहीं की। फिर आपने फरमाया, कि मैं गवाही देता हूं कि वे क़यामत के दिन अल्लाह तआला के निकट शहीद होंगे। तुम उनके पास आया करो, और उन पर सलामती भेजो। क़सम है उस ज़ात की जिस के कब्ज़ा कुदरत में मेरी जान है क़यामत के दिन जो भी उन पर सलामती भेजेगा यह उस का जवाब देंगे। आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के सहाबा यहां आते उन के लिए दुआ करते और सलामती भेजा करते।

(किताबुल मुगाज़ी ज़िक्र मिन ग़ज़वह जिल्द अव्वल पृष्ठ 267 प्रकाशन दारुल कुतुब अल्इलमिया बैरूत 2004 ई)

हज़रत सहल बिन क़ैस की बहनें हज़रत सुख़्ता और हज़रत उमराह भी आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम पर ईमान लाईं और आप की बैअत से लाभान्वित हुईं।

(अत्तबकातुल कुब्रा जिल्द 8 पृष्ठ 301 सख़्ता बिन्त क़ैस, उमराह बिन्त क़ैस प्रकाशक दारुल कुतुब अल्इलमिया बैरूत 1990 ई)

फिर अगले सहाबी हैं हज़रत अब्दुल्लाह बिन हुमय्यर अल्अशजई। इन का सम्बन्ध बनू दहमान से है जो कि अन्सार के सहयोगी थे। आप ने जंग बदर में अपने भाई ख़रजा के साथ शिरकत की। और आप जंग उहद में भी शामिल हुए।

(असदुल ग़ाबा, भाग 3, पृष्ठ 218-219, अब्दुल्लाह बिन हमीर प्रकाशक दारुल कुतुब अल्इलमिया बैरूत 2003) उनकी पत्नी का नाम हज़रत उम्मे साबित बिन हारिसा: है जो आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम पर ईमान लाई।

(अल असाबा भाग 8 पृष्ठ 366 उम्मे साबित बिन हारस: प्रकाशक दारुल कुतुब अल्इलमिया बैरूत 1995)

हज़रत अब्दुल्लाह बिन हुमैर: उन कुछ सहाबा में से एक थे, जो जंग उहद में हज़रत अब्दुल्लाह इब्ने जुबैर के साथ दर्रे पर डटे रहे थे। जब बाकी सहाबा जीत के दृश्य को देखकर बाकी मुसलमानों से मिलने के लिए नीचे गए, तो अब्दुल्लाह बिन हुमैर उन्हें नसीहत करने के लिए खड़े हुए। आपने पहले अल्लाह तआला की प्रशंसा वर्णन की और फिर अल्लाह तआला और रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की इताअत करने की नसीहत की लेकिन उन्होंने आपकी बात नहीं मानी और अब्दुल्लाह बिन जुबैर के साथ दस से अधिक सहाबी न बचे। इतने में ख़ालिद बिन वलीद और इकराम बिन अबू जहल ने घाटी ख़ाली देख कर जो सहाबी वहां रह गए थे उन पर हमला कर दिया। इस छोटी जमाअत ने उन पर तीर बरसाए यहां तक कि वे उन तक

पहुंच गए और आन की आन में सब को शहीद कर दिया।

(इमताअ अल्असमाअ जिल्द 9 पृष्ठ 229 अध्याय फी ज़िक्र मिन इस्तअला रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम दारुल कुतुब अल्इलमिया बैरूत 1999 ई)

उहद की घटना का अधिक विवरण, हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहिब ने, सीरत ख़ातमन्नबिय्यीम में लिखा है।

" कि आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ख़ुदा तआला की मदद पर भरोसा करते हुए निकल पड़े। और उहद के दामन पर डेरे डाले। इस तरीके से कि उहद की पहाड़ियाँ मुसलमानों के पीछे आ गईं और मदीना मानो सामने था और इस तरह आपने लश्कर के पीछे की तरफ सुरक्षित कर ली। पीछे की पहाड़ी में एक दर्रा था जहाँ से उन पर हमला किया जा सकता था। आप ने उसकी रक्षा करने का यह प्रबन्ध किया कि हज़रत अब्दुल्लाह इब्न जुबैर के नेतृत्व में पचास तीर अंदाज़ी करने वाले वहाँ निर्धारित कर दिए और उन्हें नसीहत की कि चाहे कुछ भी हो जाए इस स्थान को नहीं छोड़ना। और दुश्मन पर तीर बरसाएं। आप को इस दर्रा की सुरक्षा का इतना ध्यान था कि आप ने हज़रत अब्दुल्लाह बिन जुबैर को बार बार कहा कि देखो यह दर्रा किसी भी अवस्था में ख़ाली न छोड़ना। यहां कि तुम देख लो कि हम ने विजय प्राप्त कर ली है और शत्रु भाग गया है, तब भी आप इस स्थान को नहीं छोड़ना और यदि तुम देखो कि मुसलमान पराजित हो गए हैं और शत्रु हम पर विजय पा गया है तब भी इस स्थान से न हटना। यहां तक कि एक रिवायत में यह शब्द आते हैं कि "यदि तुम देखो कि परिन्दे हमारा गोश्त नोच रहे हैं फिर भी तुम यहां से न हटना यहां तक कि तुम्हें यहां से हट जाना का आदेश प्राप्त हो। अर्थात आप की तरफ से आदेश आए। इस तरह अपने पीछे को मज़बूत कर के आप ने पंक्तियां बनाईं। और विभिन्न दस्तों के अलग अलग अमीर निर्धारित किए।

जब अब्दुल्लाह बिन जुबैर के साथियों ने देखा कि अब वह जीत गए हैं, तो उन्होंने अपने अमीर अब्दुल्लाह से कहा, अब तो विजयी हो चुकी है और मुसलमान ग़नीमत का धन इकट्ठा कर रहे हैं। आप हमें आज्ञा दें कि हम लश्कर के साथ शामिल हो जाएं। हज़रत अब्दुल्लाह ने उन्हें रोका और आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का ताकीदी मार्गदर्शन की याद दिलाई, लेकिन वह जीत की ख़ुशी में ग़ाफिल हो गए थे, इसलिए वह नहीं रुके। और वे यह कहते हुए नीचे आ गए कि अल्लाह तआला के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का मतलब केवल यह था कि जब तक पूरी सन्तुष्टि न हो तब तक दर्रा ख़ाली किया जाए। और अब चूंकि विजय हो चुकी है इसलिए जाने में कोई परेशानी नहीं और सिवाए अब्दुल्लाह बिन जुबैर और उनके सात साथियों के दर्रा की रक्षा करने वाला कोई नहीं था। ख़ालिद बिन वालिद की तेज़ नज़र दूर ने दूर से दर्रा की तरफ देखा तो मैदान साफ पाया जिस पर उसने जल्दी से अपने सवारों को घुमाया और दुर्रा की तरफ मुड़ गया, और पीछे पीछे अकरम: बिन अबू जहल भी रहे लहे सहे दस्ते को साथ लेकर तेज़ी से वहां पहुंचे। और यह दोनों दस्ते अब्दुल्लाह बिन जुबैर और उन के साथियों को शीघ्र ही शहीद कर के इस्लामी लश्कर के पीछे पहुंच गए और अचानक हमला कर दिया

(सीरत ख़ातमन्नबिय्यीन हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहिब पृष्ठ 487, 488)

अगला वर्णन हज़रत अब्दुल्लाह इब्न औस अंसारी का है। पिता का नाम औस बिन मालिक। हज़रत उबैद बिन औस जंग बदर में शामिल हुए और आप ने जंग बदर में हज़रत अकील बिन अबू तालिब को कैदी बनाया। इसी तरह कहा जाता है कि आपने हज़रत अब्बास तथा हज़रत नौफल को भी कैदी बनाया। जब आप इन तीनों को रसूलुल्लाह की सेवा में लेकर हाजिर हुए तो आप ने फरमाया कि لَقَدْ اَعَانَكَ عَلَيْهِمْ مَلَكٌ كَرِيْمٌ कि इस मामले में एक महान फरिश्ते ने तुम्हारी मदद की है। इस अवसर पर आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने आप को मुर्रिन का उपनाम दिया। अर्थात ज़ंजीर में जकड़ने वाला।

(असदुल ग़ाबा, खंड 3, पृष्ठ 528-529 उबैद बिन औस प्रकाशक दारुल कुतुब अल्इलमिया बैरूत 2003 ई) एक रिवायत में आता है कि हज़रत अब्बास को जंग बदर में कैदी बनाने वाले अबुल यसर कअब बिन अमरो थे।

(असदुल ग़ाबा, खंड 3, पृष्ठ 326-327 उबैद बिन औस प्रकाशक दारुल कुतुब अल्इलमिया बैरूत 2003 ई)

हज़रत उबैद बिन औस ने हज़रत उमेम: बिन्त अन्नउमान से शादी की। हज़रत उमैमा भी आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम पर ईमान लाईं। और आप की बैअत से लाभान्वित हुईं।

(अत्तबकातुल कुब्रा जिल्द 8 पृष्ठ 257 उमैमा बिन्त अन्नुअमान प्रकाशक दारुल कुतुब अल्इल्मिया बैरूत 1990 ई)

हज़रत अबुल आस जो आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के बेटी हज़रत ज़ैनब के पति थे। जंगे बदर में मुश्रेकीन की तरफ से शामिल हुए थे। और हज़रत अब्दुल्लाह बिन जुबैर ने उन्हें कैद कर लिया था। (अल-मुस्तदरक अलस्सहीहैन किताब मअरफत अस्सहाब: मनाकिब अबी आस रबीअ हदीस 5037 जिल्द 3 पृष्ठ 262 प्रकाशक दारुल कुतुब अल्इलमिया बैरूत 2002 ई)

इस का विस्तार वर्णन बताते हुए हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहिब ने सीरत ख़ातमन्नबिय्यीन में लिखा:

" आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के दामाद अबूल आस भी बदर के कैदियों में थे उन के फिदया में उन की बीवी अर्थात आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की साहिबज़ादी ज़ैनब ने जो अभी तक मक्का में थीं कुछ चीज़ें भेजीं। उन में एक हार भी था। यह हार वह था जो हज़रत खदीजा ने अपनी बेटी ज़ैनब को दहेज में दे दिया। आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इस हार को देखा तो स्वर्गीया खदीजा की याद दिल में ताज़ा हो गई और आप रोने लगे और सहाबा से कहा अगर तुम पसन्द करो तो ज़ैनब की संपत्ति इसे वापस कर दो। सहाबा को इशारा की देर थी, ज़ैनब का सामान तुरंत वापस कर दिया गया और आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने अबू-अवास के साथ नकद फिद्या के बदले में यह शर्त रखी कि कि वह मक्का में जाकर ज़ैनब को मदीना में भेज दे। और इस तरह एक मोमिन रूह दारे कुफ्र से नजात पा गई। थोड़े समय के बाद अबुल आस मुसलमान हो कर मदीना में आए और इस तरह पति पत्नी एक साथ इकट्ठे हो गए।"

(सीरत ख़ातमन्नबिय्यीन हज़रत साहिबज़ादा मिर्ज़ा बशीर अहमद साहिब पृष्ठ 368)

जंग उहद में आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने हज़रत अब्दुल्लाह बिन जुबैर को उन पचास तीर अंदाज़ों के दस्ते का अमीर निर्धारित किया था जिसे आप ने मुसलमानों के पीछे दुर्रा में सुरक्षा के लिए छोड़ा था। बाकी विवरण तो अब्दुल्लाह बिन हुमैर की घटना में वर्णन हो गई है, और कुछ और है जो हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहिब ने लिखा है।

" आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम अल्लाह तआला की शांति और आशीर्वाद) अल्लाह तआला की मदद पर भरोसा करते हुए उहद के दामन में डेरा डाल दिया इस तरीके से कि उहद की पहाड़ी मुसलमानों के पीछे की तरफ आ गई। और मदीना उनके सामने था। और इस तरह आप ने लश्कर के पीछे वाली तरफ सुरक्षित कर ली आप ने यह प्रबन्ध अब्दुल्लाह बिन जुबेर के नेतृत्व में पचास तीर चलाने वाले निर्धारित किए और उन को नसीहत फरमाई कि चाहे जो कुछ हो जाए वे इस स्थान को छोड़ कर नहीं जाऐंगे और दुश्मन पर तीर बरसाते जाएं।"

(सीरत ख़ातमन्नबिय्यीन हज़रत साहिबज़ादा मिर्ज़ा बशीर अहमद साहिब पृष्ठ 487)

जैसा कि पहले उल्लेख किया गया है कि आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को इस दर्रे की सुरक्षा का इतना ध्यान था कि आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने हज़रत अब्दुल्लाह बिन जुबैर को बारबार कहा कि देखो यह दुर्रा किसी भी अवस्था में ख़ाली न करना। और अगर विजय भी हो जाए और दुश्मन हार के पीछे भी चला जाए तब भी तुम ने स्थान नहीं छोड़ना और अगर मुसलमानों को हार हो जाए और दुश्मन विजय पा जाए तब भी तुम ने नहीं छोड़ना।

हज़रत बरा बिन आज़िब वर्णन करते हैं कि आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने जंग उहद के दिन पैदल फौज पर हज़रत अब्दुल्लाह बिन जुबैर को निर्धारित किया था और यह पचास आदमी थे। और उन से फरमाया के अपने इस स्थान से नहीं हटना चाहे देखो के परिन्दे हम पर झपट रहे हैं। अपने स्थान पर रहना यहां तक कि मैं तुम को न बुला लूं। और अगर तुम हमें इस अवस्था में देखो कि लोगों को हम ने पराजित कर दिया है और हम ने रौंद डाला है तब भी इस स्थान से न हटना। जब तक कि मैं तुम्हें न बुला लूं। अत: मुसलमानों ने उन को हरा कर भगा दिया। हज़रत बरा कहते हैं कि अल्लाह तआला की कसम मैं ने मुश्रिक औरतों को भागते हुए देखा और वे अपने कपड़े उठाए हुए थीं। (उस ज़माना में फौजों के साथ औरतें भी उन की भावनाओं को भड़काने के लिए जाती थीं।) उन की पाज़ेबें तथा पिंडलियां नंगी हो रही थीं। अब्दुल्लाह बिन जुबैर के साथियों ने इसे देखा और कहा हे लोगों! चलो जंग का माल हासिल करें। तुम्हारे साथी जीत गए तुम क्या प्रतीक्षा कर रहे हो? अब्दुल्लाह बिन जुबैर ने कहा, क्या तुम भूल गए हो कि आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने तुम से क्या कहा था? उन्होंने अर्थात जो लोग स्थान छोड़ना चाहते थे कहा कि अल्लाह की कसम हम ज़रूर उन लोगों के पास पहुंचना

चाहेंगे। और जंग का माल लेंगे। यह बाकी वहां जंग का सामान ले रहे हैं तो हम भी जाएंगे। जब वे वहां पहुंचे, तो उनके चेहरे फेर दिए गए और हारते हुए लौटे और दुश्मन ने हमला किया और जीत उलट हज़रत बराअ कहते हैं कि यही वह घटना है जिस के बारे में अल्लाह तआला कहता है कि जब कि रसूल तुम्हारी सब से पिछली जमाअत में खड़ा तुम्हें बुला रहा था। आले इम्रान की आयत है। नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के पास बारह आदमियों के अलावा कोई न रहा, और काफिरों ने हम में से सत्तर आदमी शहीद किए। आर नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम और आप के सहाबा ने बदर में मुशरिकों के 140 लोगों को नुकसान पहुंचाया था। 70 कैदी और 70 कत्ल किए।

अबू सुफ़यान ने तीन बार पुकार कर कहा, (यह सारी घटना जंग उहद की ही वर्णन हो रही है) कि क्या तुम लोगों में मुहम्मद है। सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम? आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने सहाबा को जवाब देने के लिए मना किया। काफिरों की जो हार थी वह जब जीत में बदल गई और उन्होंने फिर से हमला कर के मुसलमानों को जीत लिया। तब उस ने कहा कि क्या तुम में मुहम्मद है? नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने सहाबा को उस का जवाब देने से मना किया। फिर उसने तीन बार पुकार कर पूछा कि क्या लोगों में अबू कहाफाह का बेटा है? फिर तीन बार पूछा, क्या तीन बार पूछा कि क्या इन लोगों में ख़त्ताब का बेटा है अर्थात उमर के बारे में पूछा? फिर वह अपने साथियों की तरफ पास लौट गया और कहने लगा ये जो थे मारे गए। ये तीन इन के लीडर हो सकते थे ये तीनों मारे गए कहा यह सुनकर हज़रत उमर ख़ुद पर काबू नहीं रख सके और कहा, हे अल्लाह के दुश्मन! तुम ने झूठ कहा है। जिन का तुम ने नाम लिया है वे सभी जीवित हैं। और जा बात बुरी है इस में से भी तेरे लिए बहुत कुछ बाकी है। अबू सुफियान बोला, यह बद्र के लड़ाई का बदला है और लड़ाई डोल की तरह होती है कभी इस की जीत और कभी उसकी जीत की तरह है। तुम्हें उन लोगों में से कुछ ऐसे पुरुष मिलेंगे जिनके हाथ नाक किसी कटे हुए होंगे। अर्थात मुस्ला किया गया है। उस ने कहा कि मैंने इस का आदेश नहीं दिया और मैंने इसे बुरा भी नहीं माना। फिर उस के बाद वह गर्व सा वाक्य पढ़ने लगा। औलो हुबुल। हुबुल की जय। हुबुल की जय, आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया, क्या अब इसे जवाब नहीं दोगे? सहाबा ने कहा, हम क्या कहें? आपने फरमाया, तुम कहो اَللّٰهُ اَعْلٰى وَاَجَلّ अल्लाह तआला ही सबसे ऊंचा और बड़ी शान वाला है। तब अबू सुफयान ने कहा कि उज़्ज़ा नाम की मूर्ति हमारी है और तुम्हारा कोई उज़्ज़ा नहीं है। आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने यह सुन कर फरमाया कि क्या तुम जवाब नहीं दोगे। हज़रत बराअ बिन आज़िब वर्णन करते हैं कि सहाबा ने आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से निवेदन किया कि हम क्या कहें? आपने फरमाया कि कहो اَللّٰهُ مَوْلَانَا وَلَا مَوْلٰى لَكُمْ कि कहो कि अल्लाह हमारा मौला है। और तुम्हारा कोई मददगार नहीं है।

(सहीह अल्बुख़ारी किताबुल जिहाद हदीस 3039)

हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ि अल्लाह तआला अन्हों ने इस बात पर बहुत विस्तार से प्रकाश डाला है। और जंग उहद पर भी प्रकाश डाला है। आप फरमाते हैं।

वे सहाबा[रज़ि॰] जो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के चारों ओर थे और जो काफ़िरों की सेना की बहुतात के कारण पीछे ढकेल दिए गए थे, काफ़िरों के पीछे हटते ही वे पुनः रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पास एकत्र हो गए। उन्होंने आपके मुबारक शरीर को उठाया तथा एक सहाबी उबैदा बिन जर्राह ने अपने दांतों से आप के सर में घुसी हुई कील को ज़ोर से निकाला जिस से उनके दो दांत टूट गए। थोड़ी देर में रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को होश आ गया और सहाबा ने मैदान में चारों ओर लोग दौड़ा दिए कि मुसलमान पुनः एकत्र हो जाएं। भागी हुई सेना पुनः एकत्र होने लगी। रसूले करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम उन्हें लेकर पर्वत के आंचल में चले गए। जब पर्वत के आंचल में बची हुई सेना खड़ी थी तो अबू सुफ़यान ने बड़े ज़ोर से आवाज़ दी और कहा— हम ने मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को मार दिया। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने अबू सुफ़यान की बात का उत्तर न दिया ताकि ऐसा न हो कि शत्रु वस्तु स्थिति से अवगत हो कर पुनः आक्रमण कर दे और घायल मुसलमान पुनः शत्रु के आक्रमण के शिकार हो जाएँ। जब इस्लामी सेना से इस बात का कोई उत्तर न मिला तो अबू सुफ़यान को विश्वास हो गया कि उस का अनुमान उचित है तब उसने बड़े ज़ोर से आवाज़ देकर कहा— हम ने अबू बक्र[रज़ि॰] को भी मार दिया। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने अबू बक्र[रज़ि॰] को आदेश दिया कि कोई उत्तर न दें। अबू सुफ़यान ने फिर आवाज़ दी— हमने उमर[रज़ि॰] को भी मार दिया। तब उमर[रज़ि॰] जो बहुत जोशीले व्यक्ति थे, उन्होंने उसके प्रत्युत्तर में यह कहना चाहा कि हम लोग ख़ुदा की कृपा से जीवित हैं और तुम्हारा मुकाबला करने के लिए तैयार हैं परन्तु रसूले करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने रोक दिया कि मुसलमानों को कष्ट में न डालो, ख़ामोश रहो। अतः काफ़िरों को विश्वास हो गया कि इस्लाम के प्रवर्तक तथा उनके दाएं-बाएं की सेना को भी हमने मौत के घाट उतार दिया है। इस पर अबू सुफ़यान और उसके साथियों ने ख़ुशी से जयघोष किया — اُعْلُ هُبَلْ اُعْلُ هُبَلْ 'हमारी सम्माननीय मूर्ति हुबुल की जय हो' कि उसने आज इस्लाम का अन्त कर दिया है।" हज़रत मुस्लेह मौऊद फरमाते हैं कि "वही रसूले करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम जो अपनी मृत्यु की घोषणा पर, अबू बक्र[रज़ि॰] की मृत्यु की घोषणा पर तथा उमर[रज़ि॰] की मृत्यु की घोषणा पर ख़ामोश रहने का उपदेश दे रहे थे ताकि ऐसा न हो कि घायल मुसलमानों पर काफ़िरों की सेना फिर से आक्रमण न कर दे और मुट्ठी भर मुसलमान उसके हाथों शहीद हो जाएं। अब जब कि एक ख़ुदा की प्रतिष्ठा का प्रश्न उत्पन्न हुआ और मैदान में शिर्क का जयघोष किया गया तो आपकी आत्मा व्याकुल हो उठी तथा आपने अत्यन्त जोश के साथ सहाबा की ओर देखते हुए फ़रमाया तुम लोग उत्तर क्यों नहीं देते। सहाबा ने कहा — हे अल्लाह के रसूल! हम क्या कहें? फ़रमाया कहो — اَللّٰهُ اَعْلٰى وَاَجَلّ (अल्लाहो आ'ला व अजल्ल) तुम झूठ बोलते हो कि हुबुल की शान ऊँची हुई। ख़ुदा एक है उसका कोई साथी नहीं, वह प्रतिष्ठावान है तथा बड़ी शान वाला है। और इस प्रकार आपने अपने जीवित होने की सूचना शत्रुओं को पहुँचा दी।" फरमाते हैं कि "इस वीरता और निर्भीकतापूर्ण उत्तर का प्रभाव काफ़िरों की सेना पर इतना गहरा पड़ा कि इसके बावजूद कि उनकी आशाएं इस उत्तर से मिट्टी में मिल गईं तथा इसके बावजूद कि उन के सामने मुट्ठी भर मुसलमान खड़े थे जिन पर आक्रमण करके उन्हें मार देना सांसारिक दृष्टि से बिल्कुल संभव था वे दोबारा आक्रमण करने का साहस न कर सके और उन्हें जिस सीमा तक विजय प्राप्त हुई थी उसी की खुशियां मनाते हुए मक्का को प्रस्थान किया।"

(दीबाचा तफ्सीरुल कुरआन अनवारुल उलूम 20 पृष्ठ 252-253)

हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ि अल्लाह तआला एक आयत की तफ्सीर में फरमाते हैं

فَلْيَحْذَرِ الَّذِينَ يُخَالِفُونَ عَنْ أَمْرِهِ أَنْ تُصِيبَهُمْ فِتْنَةٌ أَوْ يُصِيبَهُمْ عَذَابٌ أَلِيمٌ ۔ "

अर्थात जो लोग उस रसूल के आदेश का विरोध करते हैं उन्हों इस बात से डरना चाहिए कि कहीं उन को ख़ुदा तआला की तरफ से कोई आफत न पहुंच जाए या वह किसी दर्दनाक अज़ाब में पीड़ित में न हो जाए अतः देख लो...." आप फरमाते हैं कि देख लो कि" जंग उहद में इस आदेश को न मानने के कारण इस्लामी लश्कर को कितना नुकसान पहुंचा। रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने एक पहाड़ी दर्रे कि सुरक्षा के लिए पचास आदमी निर्धारित किए थे। और वह दुर्रा इतना प्रमुख था कि आप ने उन के अफसर अब्दुल्लाह बिन जुबैर को बुला कर कहा कि चाहे हम मारे जाएं या जीत जाएं तुम ने इस दुर्रे को नहीं छोड़ना। परन्तु जब कुफ्फार को हार हुई और मुसलमानों ने उन का पीछा करना शुरू किया तो इस दर्रे पर जो सिपाही निर्धारित थे उन्होंने अफसर से कहा कि अब तो विजय हो चुकी है अब हमारा यहां ठहरना व्यर्थ है। हमें आज्ञा दें कि हम भी जिहाद में शामिल हो कर सवाब को हासिल करें। उन के अफसर ने उन्हें समझाया कि देखो आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के आदेश को न तोड़ो। आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया था कि चाहे हार हो या जीत हो तुम ने दर्रा को नहीं छोड़ना। इसलिए मैं तुम्हें जाने की आज्ञा नहीं दे सकता। उन्होंने कहा रसले करीम.....(उन के बाकी साथियों ने यह कहा)" रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का अर्थ तो यह नहीं था कि चाहे विजय हो फिर भी तुम ने नहीं हिलना। आप को उद्देश्य तो केवल ताकीद करना था। अब जब कि विजय हो चुकी है तो हमारा यहां क्या काम है। अतः उन्होंने ख़ुदा के रसूल के आदेश पर....." हज़रत मुस्लेह मौऊद लिखते हैं कि" उन्होंने ख़ुदा के रसूल के आदेश पर अपने राय को प्राथमिकता देते हुए दर्रे को छोड़ दिया। केवल उन का अफसर और कुछ सिपाही .....(अर्थात अब्दुल्लाह बिन जुबैर तथा उन के कुछ साथी)" बाकी रह गए। जब कुफ्फार का लश्कर मक्का की तरफ भागता चला जा रहा था तो अचानक ख़ालिद बिन वलीद ने पीछे मुड़ कर देखा तो दर्रा को ख़ाली पाया। उन्होंने उमर बिन अलआस को आवाज़ दी ये दोनों अभी इस्लाम में शामिल नहीं हुए थे। और कहा कि देखो कैसा अच्छा अवसर है आओ हम मुड़कर मुसलमानों पर हमला कर दें। अतः दोनों जरनैलों ने अपने भागते हुए लश्कर को संभाला और इस्लामी लश्कर को बाज़ू काटते हुए पहाड़ पर चढ़ गए। कुछ मुसलमान जो वहां थे वे दुश्मन का मुकाबला करने की ताकत नहीं रखते थे

उन को उन्होंने टुकड़े टुकड़े कर दिया और इस्लामी लश्कर पर पीछे से हमला कर दिया कुफ्फार का हमला इतना तेज़ी से थे कि मुसलमान जो विजय की ख़ुशी में इधर उधर फैल चुके थे उन के कदम जम न सके। केवल कुछ सहाबा दौड़ कर आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के पास जमा हो गए। जिन का संख्या अधिक से अधिक बीस थी मगर ये थोड़े से लोग कब तक शत्रु का मुकाबला कर सकते थे आख़रि कुफ्फार के एक रैले के कारण मुसलमान सिपाही भी पीछे की तरफ धकेले गए। और आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम जंग के मैदान में अकेले रह गए। इसी अवस्था में आप के कवच पर एक पत्थर लगा। जिस आप के कवच के कील आप के सिर में चुभ गए। और आप बेहोश होकर गढ़े में गिर गए।(जो कि पहले वर्णन हो चुका है कि एक सहाबी ने वह कील निकाले और उन के दांत टूट गए)" जो कुछ शरारती लोगों ने इस्लामी लश्कर को हानि पहुंचाने कि लिए खोद कर ढांप कर रखे थे"(एक गड्डा बनाया हुआ था उस पर घास फूंस रखा हुआ था। पता नहीं लग रहा था कि यह गढ़ा है उस में आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम गिरे।)" उस के बाद कुछ अन्य सहाबी शहीद हुए उन की लाशें आप के जिस्म मुबारक पर गिरीं और लोगों में यह मशहूर हो गया कि आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम शहीद हो गए। परन्तु वे सहाबा जो कुफ्फार के धक्के के कारण पीछे धकेले गए थे कुफ्फार के पीछे हटते ही फिर आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के गिर्द जमा हो गए। और उन्होंने आप को गड़ा से बाहर निकाला। थोड़ी देर के बाद आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को होश आ गया और आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने मैदान में चारों तरफ आदमी दौड़ा दिए। कि मुसलमान फिर इकट्ठे हो जाएं। और आप उन्हें साथ लेकर पहाड़ के दामन में चले गए।

इस्लामी लश्कर को विजय प्राप्त करने के बाद एक अस्थायी हार इसलिए मिली के उन में से कुछ आदमियों ने...."(अब यह सुनने वाली बात है आप नतीजा निकाल रहे हैं कि इस्लामी लश्कर को विजय प्राप्त करने के बाद एक अस्थायी हार इसलिए प्राप्त हुई , इसलिए नुकसान पंहुचा कि उन में से कुछ आदमियों ने) " आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के आदेश का पालन करने के स्थान पर ख़ुद अपने इज्तेहाद से काम लिया और अगर रसूले करीम सल्लल्लाहो के पीछे इसी तरह चलते जिस तरह नब्ज़ दिल की हरकत के पीछे चलती है। और अगर वे समझते कि आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के आदेश के नतीजे में अगर सारी दुनिया को भी अपनी जानें कुरबान करनी पड़ती हैं तो वह एक व्यर्थ चीज़ है। और अगर व्यक्तिगत इज्तेहाद से काम लेकर उस पहाड़ी दर्रे को न छोड़ते जिस पर रसूल करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने उन्हों इस हिदायत के साथ खड़ा किया था चाहे हम विजय प्राप्त करें या मारे जाएं तुम ने इस स्थान से नहीं हिलना तो न दुश्मन को दोबारा हमला करने का अवसर मिलता और न मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को और आप के सहाबा को कोई नुकसान पहुंचता। आप फरमता हैं कि" अल्लाह तआला इस आयत में मुसलमानों को इस तरफ ध्यान दिला रहा है कि वे लोग जो मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के आदेशों का पूरा पालन नहीं करते और व्यक्तिगत इज्तेहाद को आप के आदेश पर प्राथमिक समझते हैं।" अपने व्यक्तिगत अर्थ निकालते हैं या ख़ुद ही अर्थ निकलाने लग जाते हैं या आदेशों से अर्थ लेने लग जाते हैं।) उन्हें डरना चाहिए कि इस के कारण से उन पर कोई आफत न आ जाए। या वह किसी भयंकर आज़ाब में पाड़ित न हो जाए। मानो बताया कि अगर तुम सफलता प्राप्त करना चाहते हो तो तुम्हारा काम है कि तुम एक हाथ कि उठने पर उठो और एक हाथ के गिरने पर बैठ जाओ। जब तक यह रूह जीवित रहेगी तब तक मुसलमान भी जीवित रहेंगे और जिस दिन यह रूब मिट जाएगी उस दिन इस्लाम तो फिर भी ज़िन्दा रहेगा मगर ख़ुदा तआला का हाथ उन लोगों का गला घूंट कर रख देगा जो मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की इताअत से बाहर निकलने वाले होंगे।

(तासीर कबीर जिल्द 6 पेज 410 से 412)

आज देख लें यही अवस्था मुसलमानों की है। अल्लाह तआला की मदद उन से उठ गई है। आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के उपदेश के अनुसार आने वाले मसीह और महदी को स्वीकार कर लेना, उसे मेरा सलाम पहुंचाना और उसे हकम (फैसला करने वाला) तथा अदल (न्याय करने वाला) समझना इन सब बातों की व्याख्या अब ये लोग करने लगे हैं। और इस नतीजा भी देख लें। अत: यहाँ अहमदियों के लिए भी एक सबक है, एक चेतावनी है कि मसीह मौऊद को स्वीकार करने के बाद पूर्ण आज्ञाकारिता ही सफलता और जीत की गारंटी है। इसलिए सभी को अपनी स्थिति की समीक्षा करने की आवश्यकता है कि किस सीमा तक इस की आज्ञाकारिता के मानक हैं।

यहां यह पहले उल्लेख हुआ था कि अबु सुफयान के साथ इकरम: बिन अबू जहल थे। एक अन्य संदर्भ में, हज़रत मुस्लेह मौऊद ने दूसरे सहाबी अम्रो बिन आस का उल्लेख किया कि उन्होंने पहाड़ी पर हमला किया। कुछ अन्य परंपराओं में अन्य नाम भी मिलते हैं। इस बारे में रिसर्च सेल ने जो अनुसंधान किया है वहां भी सीरत की किताबों में ख़ालिद बिन वलीद के साथ इकरम: बिन अबू जहल के हमले का वर्णन है।

(शरह ज़रकानी जिल्द 2 पृष्ठ 412 जंग उहद दारुल कुतुब अल्इलमिया बैरुत 1996)

लेकिन यह भी उल्लेख मिलता है कि मुश्रेकीन ने अपने लश्करों के साथ घुड़सवारों को जिन की क़यादत में दिया था उन में से एक अम्रो बिन आस थे।

(तारीख़ अल्खमीस भाग 2 पृष्ठ 191 जंग उहद दारुल कुतुब अल्इलमिया बैरुत 2001 ई)

तो इस बारे में यह कहते हैं कि ख़ालिद बिन वलीद ने पहाड़ के दर्रे में ख़ाली स्थान देख कर घुड़सवारों के साथ हमला किया। और इकरम: बिन अबूजहल उन के पीछे पीछे आया। यूं इन तीनों बातों को अगर एक साथ देखा जाए तो हज़रत मुस्लेह मौऊद के हवाले में भी और बाकी तारीख़ की किताबों में भी इस तरह समानता पैदा की जा सकती है कि चूंकि मुश्रकीन के घुड़सवारों के निगरान हज़रत अमर बिन आस थे इसलिए यह भी साथ होंगे। अर्थात हज़रत ख़ालिद बिन वलीद इकरम: और अम्रो बनि आस तीनों साथ होंगे और इस तरह से देखा जाए तो फिर रिवायत में कोई मतभेद नहीं होता।

हज़रत अब्दुल्लाह बिन जुबैर की शहादत की घटना ऐसी है कि जब ख़ालिद बिन वलीद और इकरम: बिन इब्न अबू जहल ने हमला किया तो हज़रत अब्दुल्लाह इब्न जुबैर ने तीरों से हमला किया यहां तक कि आप के तीर समाप्त हो गए। फिर आप ने भाले से मुकाबला किया यहां तक कि आप का भला भी टूट गया। फिर आप ने तलवार से लड़ाई की यहां तक कि आप शहीद हो गए। आप को इकरम: बिन अबू जहल ने शहीद किया जब आप गिर गए तो दुश्मनों ने आपको घसीटा और आपकी लाश बहुत ही बुरा मुस्ला किया। आपके शरीर को भाले से इतना चीरा कि आपकी आंतें भी बाहर निकल आईं।

हज़रत ख़ब्बात बिन जुबैर वर्णन करते हैं कि जब हज़रत अब्दुल्लाह इब्न जुबैर की यह अवस्था हुई, तब मुसलमान वहाँ घूम कर पहुंचे और मैं भी उनके साथ था। कहते हैं मैं उस जगह पर हंसता हूं जहां कोई भी हंसता नहीं है, (अपनी स्थिति का वर्णन कर रहे हैं।) और उस जगह पर ऊंघा जहां कोई भी नहीं ऊंघता और इस जगह पर मैंने कंजूसी की जहां पर कोई भी कंजूसी नहीं करता। जिस समय हम उन्हें उठाए हुए थे, मुश्रेकीन एक तरफ थे। मेरी पगड़ी उनके घावों से खुल कर नीचे गिर गई और हज़रत अब्दुल्लाह बिन जुबैर की आंतें बाहर आ गईं। मेरा साथी बाहर आ गया। और इस विचार से कि दुश्मन निकट है अपने पीछे देखने लग गया। इस पर मैं हँस पड़ा (कि इस समय क्या कर रहा है)। फिर एक व्यक्ति अपना भाला लेकर

दुआ का अभिलाषी
जी.एम. मुहम्मद शरीफ़
जमाअत अहमदिया मरकरा (कर्नाटक)

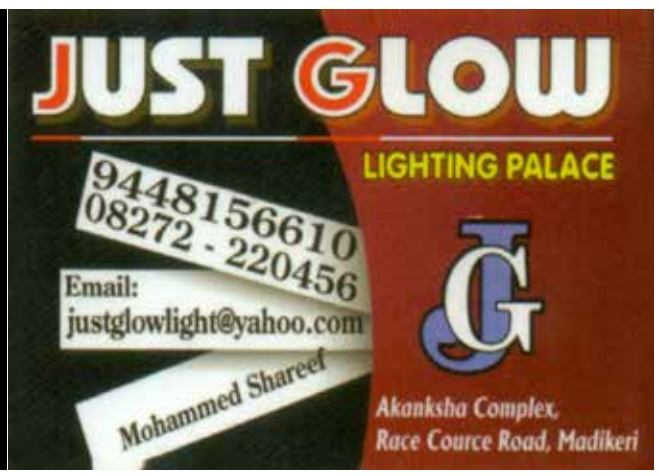

इस्लाम और जमाअत अहमदिया के बारे में किसी भी प्रकार की जानकारी के लिए संपर्क करें

नूरुल इस्लाम नं. (टोल फ्री सेवा) :
1800 3010 2131
(शुक्रवार को छोड़ कर सभी दिन सुबह 9:00 बजे से रात 11:00 बजे तक)
Web. www.alislam.org, www.ahmadiyyamuslimjamaat.in

आगे बढ़ा और वह उसे मेरे हलक के सामने ला रहा था। कि मुझे नींद आ गई और भाला हट गया? (यह भी अल्लाह तआला की तरफ से उन की मदद हुई थी। कहते हैं कि ऊंघ क्यों आई ? अल्लाह तआला की तरफ से ही ऊंघ आ गई। इस अवस्था में मैं कर तू कुछ नहीं सकता था। भला मेरे बिल्कुल गले के निकट था परन्तु फिर वह भला हट गया।) और जब मैं हज़रत अब्दुल्लाह बिन जुबैर के लिए कब्र खोदने लगा तो उस समय मेरे पास मेरी कमान थी। चट्टान हमारे लिए कठोर हो गई, तो हम उस की लाश को लेकर वादी में उतरे और मैं ने अपनी कमान के किनारे केसाथ कब्र खोदी। कमान मेरे वितर में बंधी हुई थी। मैंने कहा मैं अपने वितर को ख़राब नहीं करूंगा। फिर मैंने उसे खोल दिया और कमान के किनारे से कब्र खोदकर अब्दुल्लाह बिन जुबैर को वहां दफना दिया।

(अत्तबकातुल कुब्रा जिल्द 3 पृष्ठ 362-363 अब्दुल्लाह बिन जुबैर प्रकाशक दारुल कुतुब अल्इल्मिया बैरूत 1990 ई)

अल्लाह तआला ने जिस तरह से अब्दुल्लाह बिन जुबैर और उसके साथियों को वफा के साथ और आदेशक रूह को समझने वाला बनाया। हमें भी तौफीक़ दे कि हम अल्लाह तआला से इसी तरह आदेश को समझने वाले और पूर्ण इताअत करने वाले हों और इस तरह हमेशा अल्लाह तआला के फज़्लों के वारिस बनते चले जाएं।

नमाज़ों के बाद मैं एक जनाज़ा ग़ायब भी पढ़ाऊंगा, जो कि नादिरुल हुसैनी साहिब कनाडा का है, जो 20 दिसंबर को 85 वर्ष की आयु में वफात पा गए। इन्ना लिल्लाह व इन्ना इलैहि रजेऊन। मरहूम एक सालेह नेक तथा शरीफ इन्सान थे। उनकी वित्तीय कुरबानियां भी मानक थीं। मरहूम मूसी थे। उनके पीछे रहने वालों में पत्नी और पुत्र हैं, जो अहमदी नहीं हैं। आप अब्दुरूफ़ अल-हुसैनी साहिब के पुत्र थे जिन्होंने 1938 ई में अपने भाई मुनीर अल-हसनी साहिब के बाद बैअत की थी। अब्दुल रऊफ साहिब भी एक परहेज़गार और एक ख़ामोश तबीयत वाले तक्वा वाले आदमी थे। जब मुस्लेह मौऊद रज़ि अल्लाह तआला अन्हो ने सीरिया का दौरा किया तो अब्दुर्रऊफ अल्हसनी साहिब के घर में एक रात खाने के लिए गए थे। नादेरुल अल्हसनी साहिब के अन्दर भी अपने बाप के गुण मौजूद थे और आपने भी ईमानदारी और वफादारी में एक नमूना प्रस्तुत किया।

अमीर साहिब कनाडा लिखते हैं कि मस्जिद बैयतुल इस्लाम के बनने का बाद हर जुम्अ: के चार घण्टे ड्राइव कर के मस्जिद में आते थे। और उसी दिन सुदबरी वापस अपने घर चले जाते थे। आप को कई बार कहा गया है कि नमाज़ जुम्अ: के बाद आराम कर के अगले दिन वापस जाएं, लेकिन आप हमेशा अपने विशिष्ट शैली में कोई बहाना कर देते थे और वापस चले जाते थे ताकि जमाअत पर कोई बोझ न पड़े। यह तरीका आपने अंतिम बीमारी में भी जारी रहा। और सालों से मस्जिद बैयतुल सलाम की मस्जिद में जुम्अ: की अज़ान देने वाले थे। अज़ान देने की भी इन की एक अनूठी शैली और दृष्टिकोण भी था, और एक अजीब भावना रखते थे जिस से सुनने वालों पर एक जोश की भावना छा जाती थी ।

मरहूमा की ग़ैर अहमदी बीवी सुमय्या साहिबा लिखती हैं कि अल्लाह तआला नादिरुल हुसैनी साहिब को अपनी जन्नतों में स्थान दे। वह अपने घर वालों और जमाअत के लिए बहुत सच्चे साफ दयानत वाले और श्रद्धा वाले इन्सान थे। प्रत्येक जरूरत वाले की ज़रूरत पूरी करने की कोशिश करते और उन से दया वाला व्यवहार करते। एक ग़ैर अहमदी ग़रीब औरत की अपने सामर्थ्य के अनुसार छुप कर मदद किया करते थे। जब हम उन से मिलने जाते तो आदरणीय नादिर साहिब पहले बाज़ार जाकर उस के लिए ज़रूरी चीज़ें ख़रीदते। फिर उन के घर जाते और वफात से पहले तक यह क्रम जारी रहा। कहती हैं मैंने अपने जीवन में इन जैसा बीमारी पर धैर्य करने वाला इन्सान नहीं देखा। प्रत्येक समय अल्हमदो लिल्लाह के शब्द जीभ पर रहते थे। अल्लाह तआला के भय के साथ भरे हुए दिल के साथ ख़ुदा तआला से दुआ करते। पांचों समय की नमाज़ और तहज्जुद भी पाबन्दी से अदा करते। इन का प्रत्येक जानने वाला इन के नेक मिज़ाज को भी जानता है।

मुअतज़ कज़क साहिब कैनेडा से लिखते हैं कि सीरिया में निवास के दौरान नादिरुल हसनी साहिब के बारे में सुना। हुसनी फैमली जमाअत के साथ अपनी श्रद्धा और ख़िलाफत के साथ मुहब्बत के लिए प्रसिद्ध है। कैनेण्डा पहुंचने के बाद मेरी आदरणीय नादिरुल हुसनी साहिब के साथ मुलाकात हुई। आप बहुत नेक तबीयत तथा हंसमुख इन्सान थे। उनसे बातचीत के दौरान, मैं उनके ख़िलाफत से प्यार और मस्जिद में दोस्तों से मिलने से बहुत प्रभावित हुआ। यह कहते हैं कि उनकी नमाज़ों की पाबन्दी हम सभी के लिए एक उदाहरण थी कि हमें सबक सीखना चाहिए। कहते हैं कि उन की मृत्यु के बाद उनकी पत्नी और बेटा टोरंटो आ गए और विनीत को जमाअत के प्रबंधन के अधीन उन की सेवा करने की तौफीक़ मिली। उनके खफन दफन में मदद मिली। उनकी पत्नी ने मुझे बताया कि हमारे क्षेत्र में तीन मस्जिदें हैं और ये मुसलमानों की मस्जिदें हैं। सभी ने मुझसे मरहूम की नमाज़ जनाज़ा के बारे में पूछा, लेकिन मैंने उन्हें जवाब दिया, (यह ग़ैर-अहमदी हैं) कि मरहून का जनाज़ा उसी मस्जिद से उठेगा जहां वह नमाज़ पढ़ा करते थे। फिर यह कज़क साहिब कहते हैं मरहूम का तबूत कब्र में कब्र में उतारा जा रहा था तो अपने चाचा मरहूम अलहाज सामी अलकज़क साहिब की एक बात याद कर के मेरी आंखों में आंसू आ गए। कज़क साहिब के चाचा जब फौत हुए तो कहते हैं कि मौत की बीमारी में मैं उन के पास था। उन्होंने एक दिन रोते हुए मुझे कहा कि सय्यदी हज़रत अमीरुल मोमिनीन अय्यदहुल्लाह तआला के सूचना कर दो कि मुझे उन से मुहब्बत है। और मैं ज़िन्दगी के अख़री दम तक ख़िलाफत से वफादार रहूंगा। मेरा विचार है कि उन की वफात शायद ख़िलाफत सालिसा में हुई थी। बहरहाल जब भी यह उन के अपने शब्द थे मरहूम नादिर साहिब के बारे में भी कज़क साहिब लिखते हैं कि मेरा भी यही विचार है। आप भी ख़िलाफत के साथ बहुत ईमानदारी और निष्ठा रखते थे। इस तरह के लोगों पर ही अल्लाह तआला का यह फरमान सच्चा होता है।

مِنَ الْمُؤْمِنِيْنَ رِجَالٌ صَدَقُوْا مَا عَاهَدُوا اللّٰهَ عَلَيْهِ ۚ فَمِنْهُمْ مَّنْ قَضٰى نَحْبَهٗ وَمِنْهُمْ مَّنْ يَّنْتَظِرُ ۫ وَمَا بَدَّلُوْا تَبْدِيْلًا

(अल्अहज़ाब 24)

फिर कज़क साहिब यह कहते हैं कि मरहूम की ख़लीफाओं के साथ कई यादें जुड़ी हुई हैं। हज़रत मुस्लेह मौऊद 1955 ई में सीरिया आए थे, तो उन्हें हुज़ूर की रफाकत का सौभाग्य प्राप्त हुआ। और 3 मई 1955 ई में सीरिया अहमदियों के साथ हज़रत मुस्लेह मौऊद के साथ वहां मज्लिस हुई। कहते हैं कि इस मज्लिस में हज़रत मुस्लेह मौऊद ने उन से अरबी भाषा में ही बातें कीं। और ऐतिहासिक मज्लिस के बारे में हज़रत मुस्लेह मौऊद ने फरमाया कि यह मज्लिस जो है यह मज्लिस जो आज जमी है यह ऐतिहासिक है। इसलिए कि आज से आधी सदी से भी अधिक समय से पहले जब कि आप लोगों से कई पैदा भी नहीं हुए थे अल्लाह तआला ने हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की तरफ वह्य की थी शाम के अब्दाल और अरबों में से नेक बन्दे तेरे लिए दुआएं करेंगे। और आज आप की मौजूदगी से(हज़रत मुस्लेह मौऊद इन सीरिया के अहमदियों को कह रहे थे कि आज आप की मौजूगी से) ख़ुदा की यह बात पूरी हुई।)

इस सफर के अवसर पर हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ि अल्लाह तआला अन्हो के साथ आदरणीय नादिर हुसैनी साहिब की कुछ यादगार तस्वीरें भी इन के पास हैं। इन के भांजे अम्मार अल्हुसैनी साहिब जो यहां तब्शीर में हैं। लन्दन में रहते हैं। यह कहते हैं कि आप का हज़रत चौधरी ज़फरुल्लाह ख़ान साहिब के साथ बहुत गहरा सम्बन्ध था । मरहूम ने हज़रत चौधरी हज़रत ज़फरुल्लाह साहिब की एक किताब का अरबी भाषा में अनुवाद भी किया था। जमाअत के साथ आप का सम्बन्ध दृढ़ था। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सालम और ख़लीफाओं के बारे में कोई बुरी बात सहन नहीं कर पाते थे। एक बार अपने दो भाइयों के साथ किसी ग़ैर अहमदी की ताज़ियत के लिए गए। वहां पर सीरिया के एक प्रसिद्ध विद्वान शेख़ अल्बानी भी अपने कई शागिर्दों के साथ मौजूद थे जिन को मरहूम नादिर अल्हुसैनी और इन के भाइयों के अहमदी होने के बारे में पता था। जब इन में से एक ने हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के बारे में बुरे शब्दों का प्रयोग किया। तो मेरे मामू मरहूम नादिर अलहुसैनी साहिब जोश से खड़े हो गए और कहने लगे कि अगर तुम में किसी में हिम्मत है तो मेरे साथ मुनाज़िरा कर लो हालांकि ये तीन भाई थे। शेख़ अल्बानी साहिब के साथियों की संख्या 15 से अधिक थी। उन में से किसी एक को इस बात की हिम्मत नहीं हुई कि मुनाज़रा कर ले बल्कि मुनाज़रा के स्थान पर उन्होंने झगड़ा करना शुरु कर दिया और आप तीनों पर हमला करने की कोशिश की। परन्तु ताज़यत पर आए हुए लोगों ने बीच बचाव कर दिया। अपनी पढ़ाई के दौरान

इर्शाद हज़रत अमीरुल मोमिनीन

"अगर तुम चाहते हो कि तुम्हें दोनों दुनिया की फत्ह हासिल हो और लोगों के दिलों पर फत्ह पाओ तो पवित्रता धारण करो, और अपनी बात सुनो, और दूसरों को अपने उच्च आचरण का नमूना दिखाओ तब अलबत्ता सफल हो जाओगे।"

दुआ का अभिलाषी

धानू शेरपा

सैक्रेट्री जमाअत अहमदिया देवदमतांग (सिक्कम)

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सालम का सन्देश पहुंचाने का कोई अवसर हाथ से न जाने देते। स्कूल की शिक्षा पूरी करने के बाद मैकेनिकल इंजीनियरिंग की पढ़ाई पूरी करने के लिए अमेरिका चले गए। आख़री साल के दौरान यहूदियों के एक फिर्के से आस्था के मामले में बहस शुरू हो गई। उन के पास कोई दलील नहीं थी तो उन्होंने, विरोधी गिरोह ने प्रिंसिपल के पास जाकर शिकायत की कि उन्हें कॉलेज से निकाल दें अन्यथा हम उन पर इस तरह का आरोप लगाएंगे कि वह अध्ययन पूरा नहीं कर पाएंगे। बहरहाल फिर प्रिंसिपल के कहने पर फिर मरहूम ने ख़ुद ही अपना कॉलेज बदल दिया और संयुक्त राज्य अमेरिका छोड़ दिया और फिर कनाडा आ गए। आपका सारा ध्यान हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सालम और ख़लीफाओं की किताबें रहीं। हज़रत मसीह मौऊद अलैहस्सिालम की अरबी किताबें आप ने अपनी आवाज़ में रिकार्ड करवाईं। उर्दू भाषा भी सीखने की कोशिश कर रहे थे। और हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की फारसी कविता का अरबी भाषा में अनुवाद भी कर रहे थे। अपनी अरबी और अंग्रेज़ी भाषा की सारी क्षमता को अनुवाद के काम में लगाया। Five Volum English Commentary के पहला भाग का अरबी अनुवाद करने वाली टीम में भी आप शामिल थे। इस्लाम के विरोधियों के जवाब में हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सालम की किताबों से लाभ उठाते हुए आपने अरबी भाषा में कुछ किताबें भी लिखी हैं जिन में से एक किताब का शीर्षक है आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के प्रादुर्भाव के बारे में पिछली किताबों की भविष्यवाणियां। उनके पास एक बड़ी निजी लाइब्रेरी थी जिस में इस्लामिक किताबें थीं, जो उन्होंने वसीयत कर रखी थी कि उन की वफात के बाद यह जमाअत के हवाले कर दी जाए।

अब्दुल कादिर औदे साहिब वर्णन करते हैं कि आपने जमाअत के बारे में कुछ किताबें भी लिखी हैं। फिर व्यक्तिगत व्यय के साथ पुस्तक प्रकाशित की हैं। जमाअत और ख़िलाफत के सच्ची मुहब्बत करने वाले बहुत श्रद्धावान इन्सान थे। चन्दों का महत्व भी लोगों को स्पष्ट करते थे।

अब्दुल रज़ाक फ़राज़ साहिब मुरब्बी सिलसिला हैं और कनाडा जामिया के शिक्षक भी हैं। वह कहते हैं कि बहुत सबर और शुक्र करने वाले थे। आप अपनी बीमारी के कारण आख़री कुछ वर्षों मुंह से भोजन नहीं ले सकते थे बल्कि भोजन मशीन द्वारा दिया जाता था। आप इस अवस्था में तबीयत अच्छी होने पर जुम्अ: के लिए मस्जिद आया करते थे। जब सीरिया में स्थिति बिगड़ी और जब अरब अहमदी कनाडा आए, तो आप उनसे बहुत प्यार और गर्मजोशी से मिलते और जमाअत के साथ जुड़े रहने की नसीहत किया करते थे और कहा करते थे कि इस देश में अपने बच्चों को बचाने का एकमात्र माध्यम जमाअत और मस्जिद से जुड़ा रहना है।

मुसलेहुद्दीन शनबूज़ साहिब कैनेडा में मुरब्बी हैं। कहते हैं मुझे लिख रहे हैं कि नादिर अल्हुसैनी साहिब समय के ख़लीफा के ख़ुत्बा जुम्अ: सुन कर फिर उन के प्रिन्ट किया करते थे। और दोबार पढ़ते थे और फिर उन्हें एक फाइल में सुरक्षित कर लेते थे। घर में हज़रत अक़दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की अरबी किताबें और हज़रत मुस्लेह मौऊद अलैहिस्सलाम की तफसीर कबीर की दस जिल्दों के अरबी अनुवाद अपनी ज़ुबान में रिकार्ड कर के सुरक्षित किया और जुम्अ: के लिए आते जाते समय उन को सुना करते थे। या फिर कभी तिलावत सुना करते थे। हज़रत ख़लीफतुल मसीह राबे का दर्सुल कुरआन का अरबी अनुवाद जब एम.टी.ए पर प्रसारित होना शुरू हुआ। तो उस की भी रिकार्डिंग करना शुरू की और अपने पास सुरक्षित रखी। कहते हैं मैं कई बार उन के घर गया हूं जब भी वहां ठहरता था हर रोज़ नमाज़ फज्र से डेढ़ या दो घन्टे पहले तहज्जुद के समय रोने और गिड़गिड़ाने की आवाज़ सुनता था और अगर वह टी.वी कभी देखते थे तो केवल एम टी ए ही देखा करते थे। या कभी ख़बरें देखा करते थे। एक बार जब उनका एम टी ए ख़राब हो गया तो उन्होंने तुरंत सन्देश भिजवाया कि मेरा एम टी ए ठीक करें क्योंकि इसके बिना मुश्किल था। शन्बूर साहिब यह भी लिखते हैं कि नमाज़ में यह दुआ पढ़ा करते थे कि اَللّٰھُمَّ اَتْمِمْ عَلَیْنَا نِعْمَۃَ الْخِلَافَۃِ कि हे अल्लाह हमें ख़िलाफ़त की बरकतों से लाभ उठाने की तौफीक़ प्रदान कर। और जब भी यह दुआ पढ़ा करते थे तो रोने लग जाते थे। कहते हैं यह घटना मेरे सामने कई बार हुई।

अल्लाह तआला मरहूम के स्तर ऊंचा करे और उन के बेटे और उनकी पत्नी को भी सामर्थ्य प्रदान करे कि वे भी हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की बैअत में आने वाले हो जाएं। और इन की उन के लिए जो दुआएं हैं वे सारी स्वीकार हो जाएं।

(अल्फ़ाज़ इंटरनेशनल 04/10 / जनवरी 2019 पृष्ठ 5-8)

☆ ☆ ☆

पृष्ठ 2 का शेष

के लिए उचित योग्यता नहीं है, तो उन्हें प्रशिक्षण और प्रशिक्षित करना चाहिए ताकि वे जितनी जिल्दी हो सके योग्यता प्राप्त कर सकें। जो कुछ भी उन के प्रशिक्षण के लिए खर्च होगा वे देश और राष्ट्र के भविष्य के लिए एक मूल्यवान निवेश होगा। जहां तक सुरक्षा का सम्बन्ध है तो जिन पनाह लेने वालों के बारे में या उन के अतीत के बारे में कोई संदेह है, तो हुकूमत को उन के बारे में सतर्क रहना चाहिए और उनकी निरंतर निगरानी सुनिश्चित की जानी चाहिए यहां तक कि तसल्ली हो जाए कि वह समाज के लिए किसी प्रकार की हानि पहुंचाने वाले नहीं हैं। कुछ इस को दूसरे के व्यक्तिगत मामलों में दाख़िल होने की पालसी विचार करेंगे लेकिन समाज को जोखिम से बचाना और देश की सुरक्षा और सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिए किसी भी सरकार की सबसे बड़ी ज़िम्मेदारी है।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फरमाया: बेशक अगर कोई शरणार्थी शरारत या दंगे की नीयत से आता है तो वह इस्लाम की शिक्षाओं के ख़िलाफ कार्य करता है। कुरआन में सूरह अल-बकर: 192 में आता है यद्यपि हत्या निश्चित रूप से एक घिनौना अपराध है लेकिन बुराई और घृणा फैलाना इस से भी बुरा अपराध है। इसका मतलब यह नहीं है कि एक व्यक्ति को मारना एक मामूली अपराध है। बल्कि यहां ज़ोर देना अभिप्राय है कि समाज में घृणा फैलाना और ख़तरनाक काम है और आख़िरकार यह उत्तेजना समाज की सद्भावना को बहुत नुकसान पहुंचाती है। यह ऐसे मतभेदों और युद्धों का कारण बनती है जिस का निशाना कई निर्दोष मनुष्य बनते हैं और उत्पीड़न से पीड़ित होते हैं। पैग़म्बरे इस्लाम हजरत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने यह भी फरमाया है कि सच्चा मुसलमान वह है जिस की ज़ुबान और हाथ से बाकी लोग सुरक्षित रहें। फिर यह कैसे कहा जा सकता है कि इस्लाम ऐसा धर्म है जो हिंसा और चरमपंथ को बढ़ावा देता है? यह कैसे कहा क्या इस्लाम समाज में शरारत फैलाता है? कोई कैसे दावा कर सकता है कि इस्लाम महिलाओं के सम्मान को अपवित्र करता है? यह कैसे कहा जा सकता है कि इस्लाम अपने अनुयायियों को दूसरों की संपत्ति पर कब्ज़ा करने की इजाज़त देता है? जो कोई भी इन अपराधों को करेगा, चाहे वे इस्लाम की शिक्षाओं के प्रकाश में इसे प्रस्तुत करे या न करे वह उस की शिक्षाओं से कोसों दूर है और अपने दुर्व्यवहार का ख़ुद ज़िम्मेदार है।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फरमाया : "इस्लाम से हर मामले में मुस्लिमों से अमानत के उच्च मानकों को स्थापित करने की उम्मीद रखता है। उदाहरण के लिए, सूरह बकर: की आयत 189 में अल्लाह तआला मुसलमानों को नसीहत फरमाता है कि कभी दौलत धोखाधड़ी प्राप्त न करें, बल्कि यह शिक्षा दी गई है कि हर स्थिति में अमानत को धारण करें कि प्रत्येक उन पर भरोसा कर सके और सच के उच्च स्तर स्थापित करें। इसी प्रकार, सुरह अल्मुतफ्फीन की आयत 2 से 4 में मुस्लिमों को सिखाया गया है कि करोबार तथा व्यापार में इन्साफ से काम लें। अल्लाह तआला कहता है कि वो लोग जब लेते हैं, तो वे पूर्ण वज़न तौल कर लेते हैं और जब देते हैं तो कम वज़न देते हैं। वो लोग जो व्यवसाय में अपने फायदे के लिए दूसरों का शोषण करते हैं उन के लिए हलाक़त है और अन्त में वह असफल होंगे।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फरमाया : "सच यह है कि इस्लाम ने समाज को सभी प्रकार के अन्याय और ज़ुल्म से बचाया है। इस्लाम समाज के हर व्यक्ति के जीवन और संपत्ति की रक्षा करता है। इसलिए यह बहुत दुख और अफसोस की बात है कि लोग अभी भी हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की मुबारक हस्ती पर आरोप लगाते हैं। हालांकि आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने समाज में एक अद्वितीय आध्यात्मिक और नैतिक क्रांति फैलाई है। मानवता के इतिहास में हमें कहीं इस प्रकार के उच्च आदर्श नज़र नहीं आते जैसे आरंम्भिक मुसलमानों ने स्थापित किए हैं। वे दूसरों से लाभ नहीं उठाते थे बल्कि इस बात को सुनिश्चित करते थे कि अन्य पक्ष के अधिकार प्रभावित न हों। उदाहरण के लिए एक बार जब आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के एक सहाबी अपना घोड़ा बाज़ार दो सौ दीनार के बदले बेचने के लिए गए। तो उन्हें एक सहाबी ने कहा कि इस घोड़े की कीमत दो सौ दीनार बहुत कम हैं इस की कीमत पांच सौ दीनार होनी चाहिए। फिर कहा कि वह कोई ख़ौरात नहीं लेना चाहते नियम के अनुसार सौदा करना चाहते हैं और पांच सौ दीनार ही देंगे। इस पर घोड़ा बेचने वाले सहाबी ने कहा कि मैं भी कोई ख़ैरात नहीं लेना चाहता, इसलिए मैं इस के उचित मूल्य ही दूंगा। अत: उनकी बहस बजाय अपना फायदे सोचने के दूसरे के अधिकार अदा

करने के लिए थी। कल्पना करें कि अगर समाज के सभी लोग इस तरह से जीवन व्यतीत करते हैं हैं तो समाज कितना ख़ुशहाल होगा। एक समाज जिस में हर कोई अपने फायदे के बजाय सब की भलाई के लिए काम कर रहा होगा। दूसरे शब्दों में यह असली इस्लामी समाज होगा। यदि कोई यह देखना चाहता है कि इस्लाम क्या प्रस्तुत करता है, तो उसे ऐसे अच्छे उदाहरणों को देखना चाहिए, न कि उन लोगों को जो भेदभाव करते हैं और नफरतों का शिकार हैं और नाइन्साफी करते हुए असहिष्णुता को इस्लाम की तरफ सम्बन्धित कर देते हैं।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेरेहिल अज़ीज़ ने फरमाया : "समय की मांग है कि हम सब मुसलमानों और ग़ैर-मुस्लिम अपने कर्मों के परिणामों पर विचार करें। आज हम बड़े गर्व से वैश्विक समाज और तेज़ परिवहन सुविधाओं का वर्णन करते हैं, लेकिन इन तरक्कियों के साथ साथ हमें यह भी महसूस करना चाहिए कि दुनिया के बारे में हमारी ज़िम्मेदारियां अब पहले से बढ़ गई हैं। जहां भी लोग अपने देश में पीड़ित और मज़लूम हैं, अन्तर्राष्ट्रीय समुदाय को उनकी मदद करनी चाहिए। प्राथमिकता इस बात को देनी चाहिए आपस में लड़ने वाले गिरोहों में शान्ति करवा दें या अमन को स्थापित करें।। यदि यह संभव नहीं है तो हमें अपने दिल को उन लोगों के लिए फैला देना चाहिए जो वास्तव में प्रभावित हैं। इस तरह के असली शरणार्थियों को जो वास्तव में अत्याचार से पीड़ित हैं हरगिज़ ख़ारिज नहीं किया जाना चाहिए। किसी समाज को यह अधिकार नहीं होना चाहिए कि इन निर्दोष लोगों को छुतकार दें जो केवल अमन के तरीके पर जीवन यापन करना चाहते हैं और उस देश के कानूनों का पालन करना चाहते हैं जिस में वे रह रहे हैं। बल्कि जिनके जीवन नष्ट हो गए, जिन्हें दु:ख दिए गए जो निर्दोष और असहाय हैं। हमें उनकी मदद करने के लिए आगे बढ़ना चाहिए।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेरेहिल अज़ीज़ ने फरमाया : "आऐं हम मानवता को स्थापित करें। आइए हम अपना प्यार और करुणा दिखाएं। आइए हम ख़ुद को मदद के लिए पेश करें और बोझ साझा करें जिन्हें इस की आवश्यक ज़रूरत है। दूसरी ओर शरणार्थियों की भी नए देशों में जिम्मेदारियां हैं। उनका कर्तव्य हैं कि अपने नए समाज के लिए उपयोगी काम करें और इस में समोने की पूरी कोशिश करें। उन्हें अलग थलग नहीं रहना चाहिए और न ही स्थानीय लोगों से संबंध तोड़ना चाहिए। बल्कि अपने नए घर के सुधार और निरंतर विकास के लिए काम करना चाहिए। हमें आपस में मिल कर बेहतरी तथा निरन्तर काम करना चाहिए। हमें आपस में मिल कर इस तरह के तरीके ढूंढने चाहिए जिस से विभिन्न सभ्यताओं के लोग आपस में मिल कर एक साथ रह सकें।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला ने फरमाया: "जैसा कि मैंने कहा, दुनिया एक वैश्विक गांव की तरह है। तो हम अतीत में नहीं रह रहे जहां अगर एक देश में कुछ होता था तो केवल वहां कि स्थानीय आबादी इससे प्रभावित होती थी, या अधिक से अधिक उस का प्रभाव उस के पड़ोसी देशों तक जाता था। अब हम उस समय जी रहे हैं जहां किसी एक देश में होने वाले फसाद और संघर्ष के नतीजे पूरी दुनिया को प्रभावित करते हैं। इसलिए बजाय हमें एक दूसरे से डरने कि हमें कोशिश करनी चाहिए कि समस्याओं को आपस में प्यार से समाधान करने की कोशिश करें। हमारा लक्ष्य और गन्तव्य इस से कम नहीं होना चाहिए कि दुनिया के हर गांव शहर और देश में शान्ति स्थापित हो जाए।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेरेहिल अज़ीज़ ने फरमाया : अहमदिया मुस्लिम जमाअत के सैदव से यही लक्ष्य रहा है और इस के लिए हम कोशिश कर रहे हैं। इस के लिए बुनियादी चीज़ अमन है। और इस के लिए ज़रूरी है कि दृढ़ आस्था हो कि हम सब अल्लाह तआला के प्राणी हैं और उस ने हमें बनाया है। इस तरह हम उसे पहचानेंगे और एक-दूसरे के अधिकार अदा करेंगे। हम विश्वास रखते हैं कि यदि मानवता इस निष्कर्ष तक पहुंच जाए तो सत्य और स्थायी शांति स्थापित की जा सकती है। अफसोस के हम इस के उलटा देख रहे हैं। ख़ुदा तआला का आशीर्वाद प्राप्त करते हुए एक दूसरे के निकट आने के स्थान पर मनुष्य भौतिक संसाधनों का उपयोग कर रहा है। दिन प्रतिदिन मनुष्य धर्म और आध्यात्मिकता से दूर होता चला जा रहा है और इसके परिणाम बहुत भयावह हैं। यह मेरी दृढ़ धारणा है कि केवल अल्लाह तआला पर ईमान लाना ही हमारी मोक्ष का एकमात्र तरीका है और एकमात्र माध्यम है। जिसके माध्यम से राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर वास्तविक शांति स्थापित की जा सकती है। इसलिए यह मेरी तीव्र इच्छा और दुआ है कि दुनिया अपने निर्माता को पहचान ले और इसकी सच्ची शिक्षाओं का पालन करे। आज मैं अनुरोध करता हूं कि मनोवैज्ञानिक और राजनीतिक लक्ष्यों को प्राप्त करने के बजाय, हमें सभी मनुष्यों में बिना भेदभाव के लिए नि:शुल्क अधिकारों को अदा करने करना चाहिए। मैं दुआ करता हूं कि मनुष्य और ईश्वर के बीच की दूरी समाप्त हो जाएतब हम दुनिया में असली शांति देखने वाले होंगे। आप सभी का बहुत धन्यवाद।

हुज़ूर अनवर का यह सम्बोधन 4. बजकर 45 मिनट तक जारी रहा। इस के बाद हुज़ूर अनवर ने दुआ करवाई। इस के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेरेहिल अज़ीज़ अपने निवास स्थान पर पधारे।

आज शाम कार्यक्रम के अनुसार फिलस्तीन, जर्मनी में स्थित अलबानीयन दोस्तों और अरब देशों से संबंध रखने वाले मेहमानों और प्रतिनिधियों की मुलाकात का कार्यक्रम था। 7 बज कर 35 मिन्ट पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेहिल अज़ीज़ अपने दफ्तर आए और मुलाकातों का प्रोग्राम शुरू हुआ।

सबसे पहले फ़िलिस्तीन से आने वाले परिवारों ने मुलाकात की सआदत पाई। फिलिस्तीन से तीन अहमदी बहनें समाह अब्दुल जलील साहिबा, अम्ल अब्दुल जलील साहिबा और सहर महमूद साहिबा अपने बच्चों के साथ हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेहिल अज़ीज़ के साथ मुलाकात के लिए पहुंची थीं। अमल अब्दुल जलील साहिबा और सहर महमूद साहिबा को उनके पतियों द्वारा अहमदी होने के कारण तलाक दे दी गई। इन बहनों में से 1/3 की वसीयत है। यह पिछले साल भी जलसा सालाना जर्मनी में शामिल हुई थीं।

इस साल इन बहनों के पास सफर खर्च के लिए ज्यादा पैसा नहीं था, लेकिन उन्होंने कम लागत पर अपने बच्चों के साथ एक लंबा और दर्दनाक सफर किया। सिर्फ इसलिए कि समय के ख़लीफा से मुलाकात की तड़प थी। ये फिलिस्तीन की रहने वाली हैं। वहां से बस के द्वारा सफर कर के ओमान (जॉर्डन) पहुंची। फिर वहां से जहाज़ का सफर कर के ग्रीस पहुंची और ग्रीस से फिर बस का सफर किया और साइप्रस पहुंची। फिर यहां से जहाज़ के माध्यम से कोपेनहेगन (डेनमार्क) आईं और डेनमार्क से जहाज़ के द्वारा बर्लिन जर्मनी पहुंचीं फिर बर्लिन से जहाज़ लेकर जर्मनी के एक दूसरे शहर स्टटगार्ट पहुंचें। फिर यहाँ से कार के माध्यम से दो तीन घंटे का सफर तय करके फ्रैनकफोर्ट आईं। और बैयतुस्सुबूह पहुंचीं और फिर यहां से डेढ़ से दो घंटे की सफर के बाद जलसा गाह कार्लसर्वाए आईं।

उन्होंने हुज़ूर अनवर की सेवा में कहा कि हम लगभग डेढ़ दिन का निरन्तर सफर करने के बाद यहां पहुंचे हैं। हमे बहुत थकावट थी लेकिन हुज़ूर अनवर को देखने के बाद सब थकावट दूर हो गई है।

समाह साहिबा ने सब की तरफ से बोलना शुरू किया तो हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेरेहिल अज़ीज़ ने शफ़कत करते हुए फरमाया कि तुम सब का प्रतिनिधित्व करोगी ? इस पर महोदया ने कहा कि पिछले साल हम में से प्रत्येक ने बात करनी चाही थी और इस कारण से हम कुछ भी कह न सके। इस पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेरेहिल अज़ीज़ ने फरमाया जो बातें पिछले साल रह गई थीं वे सब कर लें।

समाह साहिबा ने निवेदन किया कि मैं मुहम्मद अलवाना की बीवी हूं। इस पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेरेहिल अज़ीज़ ने फरमाया "आप तो बहुत प्रसिद्ध हैं। (इन पति पत्नी को मुर्तद करार देकर उन्हें आपस में अलग करने के लिए उन के ख़िलाफ फ़िलिस्तीन के कोर्ट में मुकदमा किया गया है और आजकल फिलीस्तीनी मीडिया में इस मामले की बहुत चर्चा है और सोशल मीडिया पर असंख्य लोगों की इस पर नज़र है।)

दूसरी बहन सहर ने निवेदन किया कि हुज़ूर इस के केस के लिए भी दुआ करें।

हुज़ूर अनवर ने फरमाया: हाँ मुझे पता है कि अल्लाह तआला फज़्ल फरमाए। (सहर को मुर्तद क़रार देकर उसके पति ने उसके ख़िलाफ अदालत में तलाक के मामले में मुकदमा किया हुआ है ताकि पति को किसी प्रकार के कोई अधिकार न देने पड़ें। पहले अदालत ने महोदया को मुसलमान करार दिया था अब कुछ सप्ताह पहले फिर मुर्तद करार दे दिया है।)

तीसरी बहन अमल ने निवेदन किया कि मैं अपने बड़े बेटे को जो ग़ैर अहमदी है इसलिए साथ लाई हूँ कि उस पर भी अहमदियत की वास्तविकता प्रकट हो जाए।

इस पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेरेहिल अज़ीज़ ने फरमाया : "अंत में तो सत्य सभी पर प्रकट होना है। हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेरेहिल अज़ीज़ ने इस नौजवान जासिम से पूछा कि जलसा कैसा लगा? इस पर महोदय ने कहा कि जलसा बहुत अच्छा लगा कोई चीज़ ग़ैर इस्लामी नहीं था परन्तु मेरे कई सवाल हैं अगर आज्ञा हो तो एक सवाल करूं। हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेरेहिल अज़ीज़ ने फरमाया कर लें।

इस पर महोदय ने कहा कि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने अपनी किताब अत्तबलीग़" में अरबों को बड़े बड़ें अपनाम से याद किया है उन्हें असफिया, अतकिया कहा है परन्तु अरबों ने आज तक आप को स्वीकार नहीं किया।

इस पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेरेहिल अज़ीज़ ने फरमाया : अरबों में बहुत अच्छी प्रकृति के लोग हैं, आप ने उन्हें दावत दी। कि जिस की फ़ितरत नेक है वह आएगा आन्जामकार। अब अगर वे नहीं आए तो यह उनकी बदकिस्मती है लेकिन उन में से अच्छी और सईद प्रकृति वाले आ गए हैं और कुछ मेरे सामने बैठे हैं। आप ने कहीं पर यह तो नहीं कहा, कि लोग तुरंत स्वीकार कर लेंगे। यह फरमाया था कि हज़रत ईसा अलैहिस्सालम के बाद तो तीन शताब्दियों के बाद प्रभुत्व के चिन्ह पैदा हुए थे। मैं मुहम्मदी मसीह हूं। और मेरे बात इस समय में पहले ही विजय के चिन्ह प्रकट हो जाऐंगे। तीन सौ साल इंतजार नहीं करना होगा।

समाह ने कहा कि मेरा यह बच्चा मुझे तंग करता है। पढ़ता नहीं है और वक्फ नौ में है। इस के लिए दुआ करें इस पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेरेहिल अज़ीज़ ने फरमाया इस पर कठोरता न करें। यह ठीक हो जाएगा। मुलाकात का यह कार्यक्रम आठ बजे तक जारी रहा।

बाद में गैबान (Gabon) देश से आने वाले प्रतिनिधिमंडल के सदस्यों ने हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेहिल अज़ीज़ से मुलाकात की सआदत पाई। गैबान से वहां जमाअत के राष्ट्रीय सचिव वित्त बोराईमा शादोस साहिब और उनकी पत्नी और बेटा और दो बहनें प्रतिनिधिमंडल में शामिल थीं। मुलाकात के दौरान बोराईमा शादोस साहिब ने हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला की सेवा में कहा कि अल्लाह तआला की कृपा से बेनिन देश में अब एक बड़ी जमाअत है। हुज़ूर अनवर दुआ करें कि उसी तरह हमारे देश गैबान में एक बड़ी जमाअत बने और गैबान में भी जमाअत को तरक्की अता हो।

गैबान देश बेनिन का एक पड़ोसी देश है और जमाअत के प्रबंधन के मामले में बेनिन के सुपुर्द है और अभी यहां एक बहुत छोटी जमाअत है। महोदय ने अपनी बेटी के लिए बेहतर रिश्ता के लिए भी दुआ का अनुरोध किया। प्रतिनिधिमंडल के सदस्यों को भी हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला के साथ अलग-अलग तस्वीर बनाने का भी सौभाग्य प्राप्त हुआ।

इस के बाद प्रोग्राम के अनुसार जर्मनी में स्थानीय लोगों ने हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला से मुलाकात का सौभाग्य प्राप्त किया। इस साल सारे जर्मनी से लगभग 60 अल्बानियाई लोगों ने जलसा सालाना में भाग लिया। आज ये लोग हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला के साथ मुलाकात का सौभाग्य पा रहे थे।

* एक दोस्त निवेदन किया कि अल्लाह तआला का विशेष फज़्ल यह है कि आज हमें हुज़ूर अनवर से मिलने का मौका मिल रहा है। हमारे सभी मर्द औरतें हुज़ूर का शुक्रिया अदा करते हैं कि हमें मुलाकात का अवसर मिला।

*एक तब्लीग़ किए गए इमाम डॉक्टर हूद हाजी ज़ीनलाए साहिब ने अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा (महोदय सूफी तरीका फिक्र ख़लौती के इमाम हैं) कि मैं जलसा सालाना की व्यवस्था से असामान्य रूप से प्रभावित हुआ हूँ। मैंने यहां जलसा में इस्लाम शांति वाली शिक्षा के व्यावहारिक नमूने देखे हैं। नए साल के अवसर पर अहमदी दोस्त सारे जर्मनी में जो वकारे अमल करते हैं इस ने मुझे बहुत प्रभावित किया है। मेरी दुआ है कि अल्लाह तआला आप को सफलता प्रदान करे और आपको सभी मामलों में बरकत प्रदान करे।

* एक दोस्त ने कहा कि मुझे पहली बार जमाअत के किसी कार्यक्रम में शामिल होने का मौका मिला है। टीवी के माध्यम से, मीडिया द्वारा जमाअत की सेवाएं देखते हैं। इस जलसा के प्रबन्ध को देख कर मैं बहुत प्रभावित हूं और दुआ करता हूं कि ख़ुदा आपकी मदद करे।

* एक दोस्त ने कहा कि मैं कोसोवो से आया हूं और यहां जर्मनी में रहता हूं। ख़ुदा तआला ने मुझे पहला मौका दिया है कि मैं हुज़ूर को इतने निकट से देख रहा हूं। मैं बहुत ख़ुश किस्मत हूं कि हुज़ूर से मुलाकात हुई।

एक दोस्त आदरणीया आवानी कामबहरी साहिब ने अपनी प्रतिक्रिया वर्णन करते हुए कहा कि : "मैं अल्लाह तआला का बहुत आभारी हूं कि उसने मुझे अपने ख़लीफा के साथ हाथ मिलाने और गिले मिलने का अवसर प्रदान किया। हुज़ूर अनवर के अस्तित्व से केवल प्रेम की किरणें निकल रही थीं। जिन की अभिव्यक्ति जलसा सालाना के मुबारक दिनों में पल होती रही। हुज़ूर अनवर से मेरी मुलाकात एक अविस्मरणीय घटना है क्योंकि इससे पहले कभी सपने में भी हुज़ूर अनवर को नहीं मिला था।

मुलाकात के बाद, मेरी मुलाकात एक अल्जीरियाई मित्र से हुई इन के साथ मेरा पिछले 20 वर्षों से परिचय है। जब मैंने उनसे कहा कि मैंने इन दोनों हाथों से अपने प्यारे आक़ा से हाथ मिलाया है। तो उन्होंने इच्छा व्यक्त की कि मुझ से गले मिल कर बरकत को हासिल करे। में आंखों से आंसूं जारी हो गए वास्तव में ख़लीफतुल मसीह से मुहब्बत के कारण हमारे अन्दर यह मुहब्बत जारी हो गई। बाद में, एक पाकिस्तानी अहमदी भाई ने भी इसी कारण से मेरे से गले मिले। इसके बाद, मेरा दिल अल्लाह तआला की जमाअत की मुहब्बत से भर चुका था। मेरी यही दुआ है कि प्यारे आक़ा से गले मिलने की बरकत मेरे वजूद से जमाअत के लाभ में प्रकट हो। मुझे इस बात की बहुत ख़ुशी है कि मैंने प्यारे आक़ा को आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के सलाम का तोहफा पेश किया। उस समय मुझे ऐसा लग रहा था कि मानो हज़रत अक़दस मसीह मौऊद अलैहिस्सालम मेरे सामने रौनक अफरोज़ हैं।

* आदरणीया इलीर चूलिया निजी साहिब एक पुरानी अहमदी हैं। महोदय को पहला बार हुज़ूर अनवर से मुलाकात का सौभाग्य प्राप्त हुआ। महोदय ने अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा कि हुज़ूर अनवर से हाथ मिलाने के स्थिति को शब्दों में वर्णन करना उन के लिए संभव नहीं है। मुझे पूरा विश्वास है कि ख़िलाफत के माध्यम से यह आध्यात्मिक खाना केवल हम अहमदी ही नहीं बल्कि दूसरे मुसलमान भी शीघ्र लाभान्वित होंगे जिन को इस खाने की बहुत अधिक आवश्यकता है।

* एक दोस्त ने कहा कि मैंने सपना देखा था कि मैं ख़ाना काबा का हज्ज कर रहा हूं। देखा कि काबा का कवर हटा हुआ है और काबा अंदर से एक रेस्तरां की तरह नज़र आ रहा है और काबा के साथ एक दो मंज़िला घर है जिस में मैंने एक अहमदी दोस्त के साथ नमाज़ पढ़ी है। उस पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेरेहिल अज़ीज़ ने फरमाया :कि आप ने ख़ाना काबा को रेस्तरां की तर्ज़ पर देखा है इसका मतलब तो यह है कि लोग काबा में अपने सांसारिक स्वार्थों के लिए जाने लग गए हैं और सांसारिक दृष्टि से अधिक स्थान दिया जाने लगा है। ख़ुदा करे कि वह समय शीघ्र आए जब अहमदी वहां जाने लगें ताकि काबा की उत्पत्ति का उद्देश्य प्राप्त हो और उसका असली आध्यात्मिक स्थान मिले। ख़ुदा तआला ही जानता है कि वह समय कब आएगा।

हुज़ूर अनवर ने इस बारे में तज़करुतल औलिया में वर्णन अब्दुल्लाह बिन मुबारक की रोया का वर्णन करते हुए फरमाया कि सपने में फरिशते ने बताया कि इस साल किसी का हज स्वीकार नहीं हुआ केवल एक के जो हज करने नहीं आया।

*एक नौजवान ख़ादिम के विषय में बताया गया कि यह बच्चा माता-पिता की शादी के सात साल बाद हज़रत ख़लीफतुल मसीह अलराबे की दुआ से पैदा हुआ था। हुज़ूर अनवर ने एक होमियोपैथी नुस्ख़ा भी भिजवाया था। इस बच्चे की इच्छा है कि हुजडूर अनवर से गले मिले। हुज़ूर अनवर दया करते हुए उस बच्चे से गले मिले। इस युवक ने हुज़ूर अनवर के साथ तस्वीर बनाने का सौभाग्य भी प्राप्त किया ।

अरब मेहमानों मुलाकात

इस के बाद कार्यक्रम के अनुसार अरब देशों से आने वाले मेहमानों ने हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेहिल अज़ीज़ से मुलाकात की सआदत पाई। अरबों से मुलाकात का प्रबंध एक बड़े हॉल में किया गया था। अरब मर्द तथा महिलाओं की संख्या तीन सौ के लगभग थी। जिन में से दो सौ के लगभग अहमदी दोस्तों और एक सौ ग़ैर अहमदी जमाअत के दोस्त थे। इन अरब दोस्तों में सीरियन, इराक, लेबनान, मिस्र, अल्जीरिया, सूडान, सोमाली, फिलीस्तीनी और ट्यूनीशियाई लोगों शामिल थे।

हुज़ूर अनवर ने फरमाया: जो लोग पहली बार आए हैं वे अपने हाथ खड़े करें। इस पर बहुत से लोगों ने अपने हाथ खड़े किए। हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेरेहिल अज़ीज़ ने फरमाया माशा अल्लाह बहुत हैं जो पहली बार आ रहे हैं।

अल्जज़ायर से आने वाले एक अहमदी दोस्त ने निवेदन किया कि मैं विशेष रूप से जलसा सालाना पर हाज़िर हुआ हूं यह जलसा बहुत रूहानी था मेरे लिए तो एक ख़्वाब था जो ख़ुदा तआला ने पूरा किया। ज़ज़ीरे के बहुत सारे अहमदी दोस्त जलसा पर आने के इच्छुक हैं परन्तु अपनी मजबूरियां के कारण नहीं आ सकते। इन सब दोस्तों ने हुज़ूर अनवर की सेवा में सलाम भेजा है इस पर हुज़ूर अनवर ने फरमाया ख़ुदा तआला फज़्ल फरमाए। इन की अवस्था ठीक करे इन के मुकदमें ख़त्म हों और जो जेल में हैं उन की रिहाई हो।

* सीरिया से आने वाली एक अहमदी औरत ने निवेदन किया कि मैं तीसरी बार जलसा में आई हूं। प्रत्येक बार यह महसूस होता है कि मैं पहली बार आई हूं। हुज़ूर अनवर को देख कर मेरी जो भावना है वह मैं वर्णन नहीं कर सकती। इस पर हुज़ूर

अनवर ने दया करते हुए फरमाया कि आप की बाक़ी बातें समझ में आ गई हैं ख़ुदा तआला आप की नेक भावनाओं को स्वीकार करे।

* सीरिया से आने वाले एक ग़ैर-जमाअत युवा ने कहा कि मेरा सम्बन्ध अहले सुन्नत-वल-जमाअत से है। मैंने यहां जलसा में आकर कुछ देखा और सीखा है। असली और सच्चा इस्लाम मुझे यहां दिखाई दिया है। अल्लाह तआला आपकी सहायता फरमाए। हम कहते हैं कि सभी को यहां आकर सीखना चाहिए। इस पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फरमाया ख़ुदा तआला फज़्ल फरमाए। * एक बच्ची ने हुज़ूर अनवर की सेवा में निवेदन किया कि मैं यह कहना चहती हूं कि मैं आप से मुहब्बत करती हूं। यह कह कर वह रो पड़ी। हूज़ुर अनवर ने शफकत करते हुए फरमाया कि मैं भी आप से मुहब्बत करता हूं।

एक महिला ने निवेदन किया कि मैं पहली बार आई हूं। यहां बहुत अधिक आध्यात्मिकता देखी है। यहां का जो माहौल है वह मक्का मदीना के वातावरण की तरह है। मैं इस तरह के शांतिपूर्ण माहौल को देखकर बहुत हैरान हूं। मुझे वर्णन करना मुश्किल हो रहा है। हमारे सीरिया के लिए दुआ करें। इस पर हुज़ूर अनवर ने फरमाया "अल्लाह तआला फज़्ल फरमाए।

* एक बच्ची ने निवेदन किया कि मैं दुआ करती थी कि मेरी हुज़ूर अनवर से मुलाकात हो जाए। अल्लाह तआला ने आज मेरी दुआ स्वीकार की है और मैंने हुज़ूर को देखा है। इस पर हुज़ूर अनवर ने फरमाया: अल्लाह तआला फज़्ल करे।

* सीरिया से आने वाली एक नौ वर्षीय बच्ची ने कहा कि मैंने चित्र खींचा है और एक तस्वीर बनाई है। हुज़ूर अनवर की सेवा में उपस्थित करना चाहती हूं और साथ रो पड़ी। हुज़ूर अनवर ने फरमाया: आ जाओ। तो वह मंच पर आई और हुज़ूर अनवर के मुबारक हाथों पर वह काग़ज़ प्रस्तुत किया जिसमें उसने कोई तस्वीर बनाई थी। * सीरिया से आने वाली एक जवान लड़के ने कहा कि जब मैं सीरिया में था, तो मेरे दिमाग़ में प्रोग्राम थे लेकिन सब कुछ बदल गया है। मैं डॉक्टर बनना चाहता हूं, लेकिन नम्बर कम होने के कारण से यहां दाख़िला नहीं मिल रहा है। इस बारे में मार्गदर्शन चाहता हूं? इस पर हुज़ूर अनवर ने फरमाया नम्बर तो मैं नहीं दिलवा सकता वह तो आप ने ही लेने हैं। पूर्वी यूरोप में देखें और वहां दाख़िला मिलता है तो ले लें और कोशिश करें और अधिक नम्बर लें। वरना कोई दूसरा विकल्प देखें।

एक सीरियन जवान आदमी के सवाल के जवाब में हुज़ूर अनवर ने फरमाया कि मनुष्य का काम है सारे वे काम करे जो अल्लाह तआला को ख़ुश करने वाले हों अगर इस के विरुद्ध करने वाले हैं तो शैतान को ख़ुश करने वाले हैं। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सालम ने भी फरमाया था कि ख़ुदा से डरो और जो इच्छा चाहे करो।

* सुडान से एक ग़ैर जमाअत दोस्त अब्दुल करीम मुहम्मद सालेह साहिब वर्णन करते हैं कि मैंने जलसा में बहुत अनुशासन देखा। लोगों की एक बहुत बड़ी संख्या थी लेकिन सभी प्रसन्न चित मुद्रा में थे। आवास और भोजन कक्ष शांत और आरामदायक था। मैं पहली बार जलसा में शामिल हो रहा था। माहौल बहुत रूहानी था। नमाज़ तहज्जुद तथा हुज़ूर अनवर के साथ नमाज़ों का प्रबन्ध था। हाँ, मैं कह सकता हूं कि जमाअत अहमदिया सबसे संगठित जमाअत है। छोटे बड़े बिना किसी अहंकार के और खुले दिल के साथ मेहमानों की सेवा कर रहे थे। मैं दोबारा जलसा में शामिल होने की इच्छा रखता हूं।

* सीरिया से एक ग़ैर जमाअत दोस्त मुहम्मद इब्राहिम हसन करदी साहिब अपने भाव का ज़िक्र करते हुए बताते हैं: पहली बार जलसा में शामिल हुआ हूं और इंशाअल्लाह तआला आगे भी आऊंगा। जलसा बहुत अच्छा था और हमने इससे बहुत लाभ उठाया। हम अल्लाह तआला का शुक्रिया अदा करते हैं कि हमारी अमीरुल मोमिनीन से मुलाक़ात हो गई। बहुत सारी ग़लत बातें और प्रोपेगण्डा जो हम ने जमाअत अहमदिया के बारे में सुना था कि यह काफिर हैं और इसी तरह की दूसरी झूठी अफवाहें मैं विश्वास से कहता हूँ कि ये सब झूठ हैं।

* एक ग़ैर जमाअत सीरियन महिला निहाद मुस्तफा साहिबा बयान करती हैं कि मैं जलसा में पहली बार शामिल हुई हूं और इंशाअल्लाह तआला दोबारा भी शामिल होंगी। जलसा बहुत अच्छा था। हमने यहां बहुत सारी नई चीज़ें सीखी हैं जिन्हें हम पहले नहीं जानते थे। मुझे यहां आ कर जमाअत अहमदिया का परिचय हुआ है। मैं अमीरुल मोमिनीन को देखना चाहती थी और मेरी इच्छा इस जलसा में पूरी हुई। मैंने इस जलसा में कोई ग़लत बात नहीं देखी। अब मुझे पता चला है कि जमाअत अहमदिया के बारे में जो नकारात्मक प्रचार मैंने सुना था वे सब ग़लत है। मैं अल्लाह तआला से दुआ करती हूं कि वह हमेशा आपको तौफीक़ देता रहे।

* एक ग़ैर जमाअत सीरियन दोस्त सामिर रमज़ान जो कि पहली बार जलसा में शामिल हुए थे बताते हैं कि जहां तक आध्यात्मिक वातावरण का संबंध है तो जलसा की सभी कार्रवाई ही सकारात्मक थी जो प्रेम, संतोष और शांति से भरी हुई थी और जहां तक सेवा और प्रशासनिक मामला है तो बहुत शानदार थे और उन में बहुत मेहनत नज़र आती थी। जलसा के बारे में मेरी राय बहुत सकारात्मक है क्योंकि मेरी राय उन कुछ अहमदियों से संबंधित है जिनके पास बेजोड़ उच्च मूल्य हैं और मुझे इस पर गर्व है। मुझे हज़रत ख़लीफतुल मसीह अल्ख़ामिस (अल्लाह तआला आपकी उम्र दराज़ करे और आप के माध्यम से जमाअत अहमदिया को सम्मान प्रदान करे।) के दर्शन का भी सौभाग्य प्राप्त हुआ।

* एक मिस्र के नौजवान मुहम्मद रातिब साहिब कहते हैं मैं जलसा सालाना में पहली बार शामिल हुआ हूं। यहां मैंने दिलों को जीतने भाईचारे तथा मुहब्बत के वे दृश्य देखे हैं जो मैंने अपने पूरे जीवन में कभी नहीं देखा था। मैं अल्लाह तआला का आभारी हूं। मुझे समय के ख़लीफा के दर्शन की बहुत अधिक तड़प थी, जिसे अल्लाह तआला ने आप का दर्शन कर के पूरा कर दिया। मेरे पास शुक्र के शब्द नहीं हैं। मैं आपके सभी भाइयों और बहनों को मेहमानों की सेवा में लगे हुए थे को दिल की गहराइयों से धन्यवाद करता हूं।

अरब दोस्तों की हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ के साथ यह मुलाकात 9 बजे तक जारी रही। इस के बाद हुज़ूर अनवर मर्दाना जलसा गाह में पधारे और नमाज़ मग़रिब तथा इशा जमा कर के पढ़ाई। नमाज़ों को अदा करने के बाद हुज़ूर अनवर अपने निवास स्थान पर पधारे।

मेहमानों की प्रतिक्रियाएं

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला के आज के अंग्रेज़ी भाषा के ख़िताब ने मेहमानों पर गहरा प्रभाव छोड़ा और मेहमानों ने स्पष्ट रूप से कहा कि हुज़ूर अनवर के आज के ख़िताब से हमें इस्लाम की वास्तविक तथा सच्ची तस्वीर मिली है। इन मेहमानों में से कुछ की प्रतिक्रियाएं प्रस्तुत हैं।

* एक जर्मन मेहमान श्रीमान Aleksandras Sarapinas ने अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा: मुझे इस जलसा में बहुत मज़ा आया। ख़लीफतुल मसीह के भाषण का हर शब्द स्पष्ट, आम समझ वाला और दिल को प्रभावित करने वाला है, वह मुसलमानों और सारी दुनिया को प्यार का दर्स देते हैं। मैं उनकी स्वास्थ्य व सलामती के लिए बहुत दुआ करता हूँ।

* इस कार्यक्रम में एक और वकील Norbet Wagner भी शामिल थे। अपने विचार व्यक्त करते हुए उन्होंने कहा: "मैं जलसा में आठ बार आया हूं, लेकिन आज का सम्बोधन मेरे लिए बहुत अच्छा था कि मैं एक आप्रवासन वकील हूं। ख़लीफा के शब्द बहुत प्रभावशाली और संतुलित थे। आपने एक बहुत ही कठिन मामले के बारे में बात की है और बहुत सारे समाधान प्रस्तुत किए हैं। यह भी इसलिए है क्योंकि आप किसी जमाअत पर आरोप नहीं लगाते हैं, क्योंकि ऐसा कहा जाता है कि दोनों को एक दूसरे के अधिकार देना है। जबकि अन्य लोग इस मामले के बारे में बात करते हैं, तो एक तरफ झुकाव के कारण मामले की गंभीरता को बढ़ाते हैं। कोई कहता है कि शरणार्थी ग़लत हैं और कोई कहता है कि सरकार तानाशाह है जबकि ख़लीफा ने कहा है कि दोनों पक्षों को समझौता करना होगा ताकि शरणार्थी समाज का हिस्सा बनें और समाज के विकास में एक सकारात्मक भूमिका अदा करें और सरकार इस सिलसिले मैं उनकी मदद करे। आपने आगे कहा कि सरकार को स्थानीय लोगों को नज़र अंदाज नहीं करना चाहिए। जो भी ख़लीफ ने कहा, मैं सौ प्रतिशत इस से सहमत हूं। मुझे ख़लीफा को देखना बहुत अच्छा लगता है। आपका व्यक्तित्व और अंदाज़ धीमा, सम्मान वाला और बहुत धैर्य वाला है। मैं समझता हूं कि इस तरह के मुस्लिम जो गलत कृत्यों में शामिल हैं, उनके कार्यों की ज़िम्मेदारी धर्म को देनी ग़लत है।

* उनकी पत्नी गुलहिन वाग्नेर भी इस कार्यक्रम में शामिल थीं। अपने विचार व्यक्त करते हुए, उन्होंने कहा: मैं अपने पति के साथ सहमत हूं। मुझे विशेष रूप से ख़लीफा की आध्यात्मिकता पसंद आई है। आपकी भाषण शैली इतनी आध्यात्मिक है कि मैं भावनात्मक हो जाती हूं। आपका व्यक्तित्व इतना प्रतिष्ठित और शांतिपूर्ण है कि आपकी एक झलक से दिल ख़ुशी से झूम जाता है। मैं मुसलमान नहीं हूं लेकिन जब मैं ख़लीफा को देखती हूं, तो मैं उस आध्यात्मिकता को महसूस कर सकती हूं। अब मुझे पता चला है कि इस्लाम की वास्तविक शिक्षाएं क्या हैं और मीडिया इस्लाम की ग़लत छवि कैसे प्रस्तुत करता है। आपने शरणार्थियों की समस्याओं के बारे में बहुत यथार्थवादी और व्यावहारिक समाधान का सुझाव दिया है।

* एक युवा छात्र मेज़ एलाम ने भी इस कार्यक्रम में भाग लिया। यह अपनी

EDITOR
SHAIKH MUJAHID AHMAD
Editor : +91-9915379255
e-mail : badarqadian@gmail.com
www.alislam.org/badr

REGISTERED WITH THE REGISTRAR OF THE NEWSPAPERS FOR INDIA AT NO RN PUNHIN/2016/70553
The Weekly BADAR Qadian
Qadian - 143516 Distt. Gurdaspur (Pb.) INDIA
POSTAL REG. No.GDP 45/ 2017-2019 Vol. 3 Thursday 7 February 2019 Issue No. 6

MANAGER :
NAWAB AHMAD
Tel. : +91- 1872-224757
Mobile : +91-94170-20616
e-mail:managerbadrqnd@gmail.com

ANNUAL SUBSCRIBTION: Rs. 500/- Per Issue: Rs. 10/- WEIGHT- 20-50 gms/ issue

धारणा व्यक्त करते हुए कहता है: जो भी ख़लीफा ने कहा है, वह बिल्कुल ठीक और हिक्मत वाला है। आपने साबित कर दिया है कि इस्लाम अतिवाद और आतंकवाद का धर्म नहीं है, और कुछ मुस्लिमों के कार्यों को धर्म के लिए जिम्मेदार नहीं ठहराया जा सकता है। मुझे यह बहुत पसंद आया है कि किस तरह आप ने लोगों के के ज़हनों में मौजूद शंकाओं के उत्तर दिए हैं कि किस तरह लोग आप्रवासन से भयभीत हैं, घरेलू सुरक्षा और कर के बोझ वर्णन किए हैं और उनके समाधान का सुझाव दिया है। आपने यह नहीं कहा कि चिंताएं ग़लत हैं,बल्कि उन के हल का समाधान का सुझाव दिया है आप ने पनाह लेने वालों की समस्याओं का वास्तविक सुझाव दिए हैं।

* एक मेहमान Mslissa Kaynak भी इस कार्यक्रम में शामिल थे। उन्होंने विचार व्यक्त करते हुए,कि: आपका भाषण जर्मनी की वर्तमान स्थितियों को बिल्कुल दर्शाता है। आपके द्वारा चुना गया शीर्षक बहुत महत्त्वपूर्ण था कि लोगों के मन में इस्लाम का भय समाप्त किया जाए। आपने कहा कि दुनिया में समस्याएं हैं लेकिन हमें निराश नहीं होना चाहिए। आपने हमें बताया कि हम कैसे शांति स्थापित कर सकते हैं और यह इस तरह से कि हम अधिकारों को अदा करने की तरफ ध्यान दें न कि अधिकारों को प्राप्त करने की तरफ। जैसा कि आपने इस्लामिक इतिहास से उदाहरण प्रस्तुत किए कि प्रारंभिक मुस्लिम कैसे अपना अधिकार लेने के बजाए दूसरे के अधिकार पर बहस किया करते थे। यह मेरे लिए एक नई बात थी कि इस्लाम चर्चों और गिरजाओं के संरक्षण को सिखाता है। और यह कि इस्लाम में कभी भी ज़बरदस्ती की अनुमति नहीं दी गई। ख़लीफा के सम्बोधन का यह हिस्सा बहुत स्पष्ट था क्योंकि आपने कुरआन के साथ सही तरीके से तर्क दिया था। जब आपने कहा कि यदि शरणार्थी या मुस्लिम कोई ग़लत कदम उठाते हैं, तो उनको धर्म से कोई लेना-देना नहीं है। वास्तव में, इस्लाम सभी मामलों में शांति के बारे में कहता है। आपने अपने व्यवहार से भी सिद्ध किया है कि आप एक धार्मिक नेता हैं और वर्तमान युग की समय्याओं पर के बारे में बात करने से डरते नहीं हैं। आपने इमिग्रेशन के बारे में बात की है और यही कारण है कि आप लोगों को एक साथ जोड़ना चाहते हैं। कोई उपयुक्त व्यक्ति जो आप के भाषण को सुने वह समझ जाएगा कि इस्लाम कोई अतिवादी धर्म नहीं है और उसे यह मानना होगा कि ग़लत काम करने वाले तो हर धर्म में हो सकते हैं और वे ऐसे लोग होते हैं जो अपने धर्म की शिक्षा पर अनुकरण नहीं करते हैं। उन के कर्मों का आरोप धर्म पर लगाना बिल्कुल निराधार है।

इस मुसलमान औरत मऊसेने साहिबा भी इस कार्यक्रम में शामिल थी। अपने विचार व्यक्त करते हुए, उन्होंने कहा: "मैं खलीफा की हर बात से सहमत हूं। हालांकि मुझे इस बात से परेशानी भी है कि आपने अपना सारा सम्बोधन इस्लाम की रक्षा में किया है, आपको इस्लाम की रक्षा क्यों करनी पड़ी? जब अमेरिका और दूसरे देश ग़लत काम करते हैं, तो हम यह नहीं कहते कि उन्हें ईसाई धर्म की रक्षा करनी चाहिए। यह एक बड़ा अन्याय है। मीडिया ने इस्लाम को बहुत ग़लत रूप से पेश किया है इसलिए इस को रक्षा करनी पड़ रही है। जो कुछ भी आपने कहा वह बहुत प्रभावशाली था। आपने हमें एकजुट होने पर ज़ोर दिया और कहा कि हमें परिणाम देने चाहिए, भ्रष्टाचार से पवित्र होना चाहिए और दूसरों की मदद करना चाहिए। इन सिद्धांतों के साथ कोई भी कोई फर्क नहीं पड़ता। मुझे वह भी पसंद आया कि आप ने किस तरह अच्छे समाज की कुछ विशेषताओं को प्रस्तुत किया है और कहा है कि यह एक असली इस्लामी समाज है।

* एक मेहमान एंड्रियास हर्जोग भी कार्यक्रम में शामिल थे। अपने विचार व्यक्त करते हुए, उन्होंने कहा: ख़लीफा का शब्द शब्द ज्ञान और सच्चाई लिए हुए था। मैं उनके साथ सहमत हूं। मुझे सारा भाषण अच्छा लगा लेकिन भाषण का अंत बहुत अच्छा था। पहले तो आपने इस्लामी शिक्षाओं को बहुत अच्छे रंग में बचाव किया है और कुरआन के साथ तर्क प्रस्तुत किए हैं, लेकिन अंत में आपने एक और आयाम दिया है। आपने न केवल इस्लाम की रक्षा की बल्कि कहा कि यह सबसे अच्छी शिक्षा है। मुझे यह शैली पसंद आई। आपने जो कहा वह यह है कि हम सभी ख़ुदा की सृष्टि हैं, यह मेरे लिए बहुत भावनात्मक था। आप बिल्कुल ठीक कहते हैं कि अगर हम इस बिंदु को समझ जाएं तो एक दूसरे से नफरत करने का कोई कारण नहीं रहता। अत: आपका यह दृष्टिकोण मानवता को एकता में पिरोने का एक बहुत शानदार हल है। भाषण का यह हिस्सा बहुत महत्त्वपूर्ण था और मैं चाहता हूं कि लोग इस बिंदु पर विचार करें। व्यक्तिगत रूप से मुझे इस्लाम से कोई खतरा नहीं है। मैं जान चुका हूं कि यह एक धर्म है जो शांति फैलाता है और यह सभी लोगों के अधिकारों की रक्षा करता है, भले ही उन की आस्थाएं अलग अलग हों। इस भाषण से मुझे अंदाज़ा हुआ है कि कितने साफ दिल हैं। हां, यह बात ठीक है कि हम कुछ मूल्यों में साझा नहीं हैं, लेकिन इसका मतलब यह नहीं है कि हम दुश्मन हैं।

* एक मेहमान Markelian Shparthi ने अपने भाव प्रकट करते हुए कहा कि ख़लीफा की बहुत सी बातें बहुत अच्छी और महत्त्वपूर्ण हैं। ये वे प्रश्न हैं जो आजकल के लोगों के लोगों के दिमाग़ में हैं, आपने उन का बहुत अच्छे तरीके से उत्तर दिया है। इस समय जब कि समाज पारस्परिक रूप से बट रहा है, इस समय में ख़लीफा लोगों को एकजुट करना चाहते हैं। आपने यह नहीं कहा कि सब ठीक है, बल्कि समाज की समस्याओं का वर्णन किया है और आप ने किसी एक पक्ष को दोष नहीं दिया है बल्कि दोनों पक्षों को उनकी ग़लतियों की पहचान कराई है। फिर आपने महान समाधान भी सुझाए हैं। विशेष रूप से, आप्रवासन मुद्दों के संदर्भ में समाधान हल किए गए हैं। आपका भाषण और आपका व्यक्तित्व हम सभी के लिए एक ज्योति पुंज है। जिस तरह से आपने सरकार को बताया है कि उन्हें शरणार्थियों को मदद करें, वहां शरणार्थियों को भी यह बताया है कि वे समाज में अपना भाग डालें यह बहुत प्रभावशाली था। ये उन लोगों की बैचेनी समाप्त करने के लिए बहुत महत्त्वपूर्ण है जो कहते हैं कि शरणार्थियों को ग़ैर कानूनी लाभ मिल रहे हैं। आपने फरमाया है कि इस्लाम समाज में प्रत्येक को उपयोगी हिस्सा बनने के लिए नसीहत करता है। अत: जिस तरीके से भी मदद की जाए ज़रूर करनी चाहिए इसे किया जाना चाहिए, और यदि हर कोई इस तरह काम करे तो समाज शांतिपूर्ण होगा। मुझे यह भी सीखने को मिला है कि कैसे इस्लाम महिलाओं से व्यवहार के बारे में शिक्षा देता है। कभी-कभी हमें लगता है कि मुस्लिम महिलाएं कमज़ोर हैं और उन्हें दबाया जाता है। आपने साबित कर दिया है कि इस्लामी समाज महिलाओं को पूर्ण स्वतंत्रता देता है और हरगिज़ इन के अपमान की किसी को अनुमति नहीं देता। यह भी कहा कि यदि एक मुसलमान किसी महिला को परेशान करता है, तो उसका का यह काम इस्लाम के ख़िलाफ है और उस के लिए सज़ा है। मैं ख़लीफा का शुक्रिया अदा करना चाहती हूं कि इस देश को सच्चे इस्लाम का संदेश पहुंचाया है।

* प्रोग्राम में मेयर Joachim Rodenkirch भी शामिल थे। उन्होंने अपने विचार को व्यक्त करते हुए कहा: मैं ख़लीफा के भाषण के विषय से बहुत प्रभावित हूं। इस्लाम के ख़िलाफ बहुत कुछ कहा और लिखा जा रहा है और लोगों के दिमाग में बहुत सारे भय हैं। आपने यह साबित कर दिया है कि इस्लाम चरमपंथी धर्म नहीं है बल्कि सहिष्णुता का धर्म है। उन्होंने अपने विचार को व्यक्त करते हुए कहा कि: "मुझे ख़ुशी है कि आपने आप्रवासन के बारे में बात की है क्योंकि यह हमारे समाज का एक प्रमुख मुद्दा है। ख़लीफा ने एक बहुत ही संतुलित तरीके से बात की है कि दोनों पक्षों की कुछ ज़िम्मेदारियां हैं जिन्हें उन्हें अदा करने करना चाहिए और शांति तब तक स्थापित नहीं की जा सकती जब तक कि वे अपनी ज़िम्मेदारियों को अदा करने पर ध्यान केंद्रित न करें। यदि मैं आपके भाषण सारांश का वर्णन करूं तो यह है कि उस समय तक हम शांति प्राप्त नहीं कर सकते हैं। जब तक एक साथ न हों नस्लवाद और पूर्वाग्रह के लिए कोई जगह नहीं है, बल्कि हमें सहनशीलता दिखाना चाहिए और यही इस्लाम है। मुझे यह ख़ुशी है कि शरणार्थियों की तरफ महिलाओं को तंग किए जाने के बारे में भी आप ने बात की क्योंकि इस पर भी आज कल बहुत बहस है। आपने यह साबित किया है कि महिलाएं कोई दूसरे स्तर की प्राणी नहीं हैं कि जिन्हें परेशान किया जाएगा बल्कि वे बराबर हैं। आपने यह भी बताया कि इस्लाम यौन उत्पीड़न इस्लाम के विरुद्ध है। मैं यह भी कहना चाहता हूं कि हुज़ूर से मैं पहली बार मिला हूं और यह मेरे लिए ख़ुशी का विषय है। आपका व्यक्तित्व और आपका अनुमान इतना अच्छा है कि हर कोई आपको प्यार करता है।

(शेष.....)

☆ ☆ ☆

Printed & Published by: Jameel Ahmed Nasir on behalf of Nigran Board of Badar. Name of Owner: Nigran Board of Badar. And printed at Fazle-Umar Printing Press. Harchowal Road, Qadian, Distt. Gurdaspur-143516, Punjab. And published at office of the Weekly Badar Mohallah - Ahmadiyya, Qadian Distt. Gsp-143516, Punjab. India. Editor:Shaikh Mujahid Ahmad